Delhi Postal Regd. No. DL (C)-01/1272/2024 R.N.I No. 720 14/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

vgZr mokp

आमोक्खाए परिव्विएज्जासि।

iq#'k!rwekS{kizkfIr rd pyrk pyA

1 ubZ fnYyh 1 o'kZ 25 1 vad 17 1 29 tuojh & 4 Qjojh] 2024 1 izR;sd lkseokj 1 izdk'ku frfFk % 27&01&2024 1 ist % 12 1 ₹10 रुपये

सत्यान्वेषण और मैत्रीपूर्ण व्यवहार हो जीवन में : आचार्यश्री महाश्रमण

सरवली-कल्याण, २२ जनवरी, २०२४

तेरापंथ के राम, पुरुषोत्तम आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मर्यादा पुरुषोत्तम समवसरण में नाकोड़ा कर्ण-बधिर विद्यालय-सरवली के प्रांगण में पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी को अपने जीवन में यथार्थ का पथ स्वीकार करना चाहिए। यथार्थविद् और यथार्थवादी बन जाना बहुत बड़ी बात हो जाती है।

एक शब्द है–आप्त। जो यथार्थ का वेत्ता है, यथार्थ-भाषी है, वह आप्त होता है। सच्चाई को पाने के लिए आदमी को खोजी-अन्वेषक बनना होता है। इससे सच्चाई उजागर हो सकती है। आत्मना स्वयं सत्य का अन्वेषण करें। विज्ञान के द्वारा भी कई यथार्थ सामने आ सकते हैं। आदमी जो बोले, बात रखे वह बात यथार्थ हो। आदमी को झूठ बोलने, छल-कपट करने से बचना चाहिए। साधु के तो दूसरा महाव्रत सर्व मृषावाद विरमण होता है, जिसके अंतर्गत झूठ न बोलने का संकल्प रहता है। गृहस्थ भी मिथ्या भाषण से बचने का प्रयास करें। दुराग्रह से जो जकड़ गया है, उसके लिए सच्चाई को उजागर करना मुश्किल है। भीतर की गहराई में जाने से जो सच्चाईयाँ मिलती हैं, वे संभवतः ग्रंथों से नहीं मिल सकती। केवलज्ञान जिसे हो गया तो उसके लिए तो सारी सच्चाईयाँ एकदम सामने आ गई। केवलज्ञानी के लिए कोई बात अज्ञात नहीं है। केवलज्ञानी ने जो प्रवेदित किया है, वह सत्य और निशंक होता है।

यह खोज का विषय है कि मैं कौन हूँ? मेरे भीतर है क्या? पूर्वजन्म व पुनर्जन्म है या नहीं? इनमें भी अनाग्रह भाव से ध्यान दिया जाए। पुनर्जन्म है, इस सिद्धांत को ध्यान में रखकर अपनी जीवनशैली का निर्धारण करना चाहिए। पापों से बचना चाहिए। प्राणियों के प्रति मैत्री का भाव रहे। सबके प्रति मंगल और सद्भाव रहे। सच्चाई को पाने की साधना करनी है, तो दूसरों की सच्ची बात का खंडन नहीं करना चाहिए। हम जीवन में सत्यान्वेषण और मैत्रीपूर्ण व्यवहार करने का प्रयास करें।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि जो व्यक्ति अच्छा इंसान बनना चाहता है वो अपने जीवन में चार रक्षक–सत्य, प्रेम, न्याय और त्याग को अपनाए। हमें पूज्यप्रवर में ये चारों रक्षक दिखाई देते हैं। इसी कारण आप जहाँ-जहाँ पधारते हैं, लोग आपको सम्मान देते हैं। इनसे हमारा जीवन भी आदर्श बन सकता है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्कूल की प्रिंसिपल अश्विनी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। विद्यालय के कर्ण-बधिर बच्चों ने सुंदर प्रस्तुति दी।

स्कूल संस्थान के संस्थापक ट्रस्टी अनिल जैन ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अयोध्या में नवनिर्मित श्रीराम मंदिर का उद्घाटन हुआ है। श्री राम त्रिषष्टि शलाका पुरुषों में आठवें बलदेव के रूप में विख्यात हैं। उनके जीवन से आध्यात्मिकता और वीतरागता की प्रेरणा प्राप्त होती रहे।

आत्मा ही परम ऐश्वर्य संपन्न ईश्वर है : आचार्यश्री महाश्रमण

भिवंडी, २१ जनवरी, २०२४

मुंबई की टेक्सटाइल सिटी भिवंडी में आज तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी का पावन पदार्पण हुआ। विशाल जनमेदिनी को अध्यात्म का रसास्वाद कराते हुए अहिंसा के अग्रदूत ने फरमाया कि जैन दर्शन में अनेक वाद-सिद्धांत हैं। आत्मवाद जैन दर्शन का एक प्रमुख सिद्धांत है, जहाँ आत्मा को शाश्वत बताया गया है। आत्मा कभी पैदा हुई है, यह जैन दर्शन नहीं स्वीकार करता। जैन दर्शन के अनुसार तो आत्मा हमेशा ही थी, है और हमेशा ही रहेगी।

जो शाश्वत है, उसकी उत्पत्ति नहीं और विनाश भी नहीं होता। अनंत-अनंत आत्माएँ हमारे इस लोक-सृष्टि में हैं। न तो कभी एक नई आत्मा बढ़ती है और न ही एक आत्मा कभी घटती है। जितनी आत्माएँ अनंत काल पहले थी, उतनी आत्माएँ आज हैं और अनंत काल के बाद भी उतनी आत्माएँ दुनिया में रहेंगी। आत्माएँ संसार से मोक्ष में जा सकती हैं, अव्यवहार राशि से व्यवहार राशि में आ सकती हैं, पर नई आत्मा पैदा नहीं होती।

आत्मवाद आस्तिकवाद का प्रमुख सिद्धांत है। जो पूर्वजन्म या पुनर्जन्म, स्वर्ग-नरक आदि को नहीं मानता वह नास्तिकवादी है। ईश्वर कर्तृत्व को जैन दर्शन नहीं मानता। जैन दर्शन में आत्मा ही ऐश्वर्य संपन्न ईश्वर रूप में है, आत्मा ही सुख-दुःख की कर्ता है। जैन दर्शन पूर्वजन्म और पुनर्जन्म को स्वीकार करता है। मतिज्ञान के एक भेद जाति स्मृति से कई जीवों को पूर्व जन्म की स्मृति हो सकती है। मृत्यु और जन्म के समय ऐसी स्थितियाँ बनती हैं जिसमें पिछले जीवन की स्मृतियों पर पर्दा आ जाता है। जाति स्मृति समनस्क भवों का ही हो सकता है। तीर्थंकर आदि दूसरों से सुनकर भी पूर्व जन्म की जानकारी हो सकती है।

कर्मवाद का सिद्धांत भी जैन दर्शन में है। आत्मा कर्मों का बंधन करती है, तो फल भी भोगती है। कर्मों का निर्जरण भी हो सकता है। पूर्वकृत कर्मों का वेदन करने से या तपस्या से कर्म का निर्जरण करने से छुटकारा मिल सकता है। आत्मा ही कर्मों की कर्ता और भोक्ता भी है। हमें जीवन में बुरे कार्यों-पापों से बचना चाहिए। ताकि बुरे फल नहीं भोगना पड़े।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

E दूसरों को कष्ट पहुँचाना कदाचार है और दूसरों को सुख पहुँचाना तथा कष्ट न पहुँचाने का संकल्प सदाचार है।

–आचार्य श्री महाश्रमण

पूज्यप्रवर की सन्निधि में अणुव्रत गीत महासंगान का आयोजन

शिक्षण संस्थान शिक्षा के साथ अच्छे संस्कार भी देने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

ठाणा, १८ जनवरी, २०२४

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी द्वारा प्रणीत अणुव्रत आंदोलन अपने ७५वें वर्ष में चल रहा है। वर्तमान अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने इस वर्ष को अणुव्रत का अमृत महोत्सव वर्ष घोषित कर रखा है तथा उनकी अणुव्रत यात्रा भी चल रही है। अणुव्रत अमृत महोत्सव वर्ष में १८ जनवरी, २०२४ को अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में देश-विदेश में अणुव्रत गीत महासंगान का विराट आयोजन किया गया, जिसमें लाखों लोगों ने अणुव्रत गीत का संगान किया।

इस अवसर पर आचार्यश्री ने मंगल पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि धर्म को उत्कृष्ट बताया गया है। अहिंसा, संयम और तप मंगल धर्म हैं। यदि सभी लोग साधुत्व की साधना न भी कर सकें तो अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों को स्वीकार कर अपने गृहस्थ जीवन को भी धर्म से भावित बना सकते हैं। परमपूज्य आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया जो आज भी निरंतर गतिमान है। आचार्यप्रवर ने कहा कि आज का मूल कार्यक्रम अणुव्रत गीत का संगान है। मैं खड़ा होकर इस गीत को गाना चाहता हूँ। ऐसा कहते हुए आचार्यश्री पट्ट से नीचे उतरे तो उपस्थित श्रद्धालु, विद्यार्थी व गणमान्य व्यक्ति भी खड़े हो गए और फिर आचार्यश्री के संग आरंभ हुआ अणुव्रत गीत का महासंगान। इस दौरान अणुव्रत गीत में निहित संदेशों से पूरा वातावरण गूंजायमान हो गया। अणुव्रत गीत के महासंगान के उपरांत आचार्यश्री ने अणुव्रत उद्घोष का उच्चारण भी करवाया।

शिक्षा मंत्री दीपक केशरकर ने कहा कि आचार्यश्री पूरे विश्व में शांति का संदेश देने के लिए पदयात्रा करवा रहे हैं। अजय आसर ने कहा कि आचार्यश्री जी अणुव्रत के माध्यम से सद्भावना और नशामुक्ति की भावना आगे बढ़ा रहे हैं। इस गीत का रोज संगान करने से हमारे जीवन में अनुशासन आ सकता है।

अणुव्रत गीत महासंगान के संयोजक महेंद्र बागरेचा ने विद्यार्थियों का आभार प्रकट करते हुए तेरापंथ धर्मसंघ की जानकारी दी।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

लाखों लोगों ने गाया अणुव्रत गीत

स्कूलों-कॉलेजों, कारागारों, कार्यालयों तथा सभा भवनों में रही 'संयममय जीवन हो' की गूँज

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के युवा शक्ति की रही सक्रिय सहभागिता

- विश्व की अधिकांश समस्याओं का कारण असंयम है। अणुव्रत गीत हमें संयममय जीवन की ओर प्रशस्त करता है। नैतिक एवं चारित्रिक मूल्य ही किसी समाज एवं देश को महान बनाते हैं। इन मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए अणुव्रत गीत उत्तम प्रेरणा का अमोघ साधन है। जब तक व्यक्ति स्वयं अनुशासित नहीं रहता, तब तक विश्व को सुंदर बनाने की परिकल्पना करना निरर्थक है। अणुव्रत गीत के माध्यम से अखिल विश्व में निवास करने वाले व्यक्तियों के मध्य मैत्री भाव बढ़ाने पर बल दिया गया है। इस प्रकार आचार्य तुलसी कृत अणुव्रत गीत में अणुव्रत के मानवतावादी दर्शन का बेहतरीन दिग्दर्शन है।
- अणुव्रत गीत महासंगान की सफलता देशभर में अणुव्रत कार्यकर्ताओं का समर्पित श्रम मुखरित हुआ। अणुव्रत गीत के माध्यम से प्रत्येक कार्यकर्ता के मन में अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी के प्रति श्रद्धा के गहरे भाव जुड़े हैं। अणुव्रत आंदोलन के ७५वें वर्ष में कृतज्ञ कार्यकर्ताओं की अपने आध्यात्मिक गुरु के प्रति यह एक हार्दिक व रचनात्मक श्रद्धांजलि का ही रूप था।
- अणुव्रत गीत का १३ भाषाओं में लिप्यांतरण करवाकर उपलब्ध कराया गया ताकि गैर-हिंदीभाषी क्षेत्रों में भी इसे सहजता के साथ गाया जा सके। अणुव्रत गीत की धुन के साथ-साथ इसके बोलों को दिखाते हुए वीडियो बनाया गया जिसे अनेक आयोजन स्थलों पर स्क्रीन लगाकर दिखाया गया। अणुव्रत गीत के भावार्थ को व्याख्यायित करने वाली ६:१५ मिनट की डोक्यूमेंट्री जन-जन को अणुव्रत के दर्शन से परिचित कराने में प्रभावी बनी। डोक्यूमेंट्री निर्माण में मुंबई के ललित छाजेड़ का सहयोग प्राप्त हुआ।
- अणुव्रत गीत महासंगान की आयोजना में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद का सहयोगी संस्था के रूप में जुड़ना एक विशिष्ट उपलब्धि रही। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष रमेश डागा, महामंत्री अमित नाहटा ने जिस उत्साह और आत्मीयता के साथ इस अभियान में अपना सहयोग प्रदान किया, वह निश्चय ही प्रशंसनीय है। उन्होंने अपने स्तर पर कुलदीप कोठारी को संयोजकीय दायित्व प्रदान कर इस जुड़ाव को सहज बना दिया। देशभर में फैली ३०० से अधिक परिषदों के कार्यकर्ताओं ने इस अभियान में बढ़-चढ़कर भाग लिया। जिन क्षेत्रों में अणुव्रत का संगठन नहीं है, वहाँ परिषदों ने अपने स्तर पर अणुव्रत गीत महासंगान का आयोजन किया।
- अणुव्रत गीत महासंगान के कार्यक्रम को लेकर अणुव्रत कार्यकर्ताओं ने एक व्यापक अभियान चलाकर राजनेताओं, प्रशासनिक अधिकारियों, साहित्यकारों व कलाकारों, आध्यात्मिक गुरुओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं से संपर्क किया। इनसे प्राप्त भावपूर्ण समर्थन कार्यकर्ताओं के उत्साह को बढ़ाने वाला था। अनेक विशिष्ट जनों ने अणुव्रत गीत महासंगान को लिखित में अपना समर्थन दिया और वीडियो बाइट्स के माध्यम से आमजन को इस अभियान से जुड़ने का संदेश दिया।
- अनेक स्थानों पर जिला अधिकारियों, शिक्षा अधिकारियों व जेल प्रशासकों ने अपने कार्यक्षेत्र में आने वाले संस्थानों में अणुव्रत गीत गाने का लिखित निर्देश जारी किया।
- अणुव्रत गीत महासंगान में विद्यालयी बच्चों की बहुत बड़ी संख्या में सहभागिता एक उज्ज्वल भविष्य का दिशासूचक बनकर सामने आई। देशभर में विद्या भारती के लगभग २५ हजार विद्यालयों के लाखों विद्यार्थियों ने १८ जनवरी को अणुव्रत गीत का संगान किया। राष्ट्रीय स्तर पर विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के महामंत्री अवनीश भटनागर ने अपने पत्र में यह निर्देश भी जारी किया कि न सिर्फ अणुव्रत गीत को गाया जाए, वरन बच्चे इस गीत को कंठस्थ करें ताकि गीत में निहित भावों को वे आत्मसात कर सकें।
- एक ओर जहाँ अणुव्रत अनुशास्ता ने स्वयं अपने श्रीमुख से अणुव्रत गीत का संगान किया, वहीं देशभर में प्रवासित साधु-साध्वी व समणीवृंद ने उपस्थित श्रद्धालुओं के मध्य गीत का संगान कर अणुव्रत के संदेश को मुखरित किया।
- श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, तेयुप, तेममं, टीपीएफ ने भी अपने स्थानों पर अणुव्रत गीत महासंगान के अभियान में सहभागिता की। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष मनसुख सेठिया ने उस दिन अपने परिवार में आयोजित वैवाहिक समारोह में उपस्थित अतिथियों के साथ अणुव्रत गीत का सामूहिक संगान किया। अन्य कई स्थानों पर भी वैवाहिक समारोहों में अणुव्रत गीत का संगान किया गया।
- स्थानीय स्तर पर आयोजित कार्यक्रमों की रिपोर्टिंग हेतु एक ऑनलाइन फॉर्म उपलब्ध कराया गया था। समाचार लिखे जाने तक ३०८३ स्थानों से कार्यक्रम आयोजित किए जाने की सूचना प्राप्त हो चुकी थी। अन्य काफी स्थानों से अभी जानकारी प्राप्त की जानी है।
- अणुव्रत गीत महासंगान के लिए अनेकों जिला शिक्षा अधिकारियों, कारागृहों एवं राज्य सरकारों ने अपने-अपने स्तर पर आदेश जारी कर संगान हेतु प्रेरित किया।
- विभिन्न जाति एवं संप्रदायों के अनेकों लोगों ने देश-विदेश में बढ़-चढ़कर इस कार्यक्रम में भाग लिया।

चेतना रूपी पात्र में होता रहे धर्म का संचय : आचार्यश्री महाश्रमण

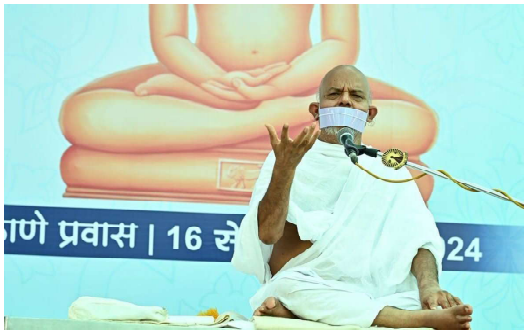

ठाणा, २० जनवरी, २०२४

ठाणे प्रवास के अंतिम दिन आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी के जीवन में द्वंद्वात्मक स्थितियाँ समुत्पन्न हो सकती हैं। जैसे लाभ-अलाभ, सुख-दुःख, जीवन-मरण, निंदा-प्रशंसा, मान-अपमान, ऐसी अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियाँ हमारे जीवन में आ सकती हैं।

सामान्य आदमी हो या महापुरुष उनके जीवन में भी विरोधी परिस्थितियाँ स्थान ग्रहण कर सकती हैं। अध्यात्म की साधना जन्म-मरण से मुक्ति की साधना होती है, वहाँ समता रखना साधना होती है। अनुकूलता में ज्यादा खुशी न हो और प्रतिकूलता में मन मुरझाए नहीं, मध्यस्थता की स्थिति में रहना चाहिए।

साधु को भोजन मिल जाए तो अच्छी बात है। कभी भोजन न मिले तो भी ठीक है। न मिले तो तपस्या का लाभ हो जाता है, मिले तो शरीर को पोषण मिल जाएगा। साधु हर स्थिति में समता रखें। जैन दर्शन में हमें समता-धर्म की बात मिलती है। आदमी के मन में किसी प्रकार का भय न हो। निर्भय आदमी सुखी रह सकता है। व्यक्ति को परम सुखी बनने के लिए समता धर्म की शरण में जाना चाहिए।

सबसे कम उम्र में आचार्य बनने वाले, लंबे आचार्यकाल को प्राप्त होने वाले और लंबी यात्राएँ करने वाले गुरुदेव तुलसी हुए हैं। सम्मान भी उनको मिला तो उनका विरोध भी हुआ। गृहस्थ भी हर स्थिति में समता भाव रखे। कई बार एक साथ कई खराब परिस्थितियाँ आ सकती हैं पर समता की साधना से परिस्थितियाँ हमें प्रभावित नहीं कर पाती। सहज आनंद में रहने का प्रयास करें।

मानव जीवन हमें प्राप्त है। हम त्याग, तपस्या, संयम से अध्यात्म की साधना करें, धर्म का संचय करें।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में तेयुप ठाणे, सिटी सेंट्रल, वागले एवं कोपरी के सदस्यों ने समूह गीत की प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला की सुंदर प्रस्तुति हुई। ज्ञानार्थियों ने पूज्यप्रवर से संकल्प स्वीकार किए। टीपीएफ अध्यक्ष कमलेश रांका ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। अणुव्रत समिति सदस्यों ने गीत की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

पूज्यप्रवर की सन्निधि में अणुव्रत गीत महासंगान---

(पृष्ठ २ का शेष)

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में परम पावन ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी के जीवन में शिक्षा का बहुत महत्त्व होता है। क्योंकि शिक्षा के द्वारा हमें ज्ञान प्राप्त होता है। ज्ञान एक प्रकार का प्रकाश होता है। कैसे जीवन जीना, कैसे आगे बढ़ना, यह मार्ग प्रशस्त हो सकता है।

विद्यार्थी विद्यालयों-विश्वविद्यालयों में पढ़ते हैं। पढ़ने का उद्देश्य है–ज्ञान प्राप्त करना, लर्निंग तथा अर्निंग। साथ में संस्कार भी अच्छे आएँ। शिक्षण संस्थान शिक्षा के साथ अच्छे संस्कार भी देने का प्रयास करें।

अणुव्रत गीत में बहुत अच्छी संस्कारों की बातें आ गई हैं। इससे भाव-परिवर्तन हो सकता है। साध्य को पाने के लिए साधन की शुद्धता भी हो। अहिंसा और संयम जीवन में रहे। कायरतापूर्ण अहिंसा न हो। शौर्य और अभय के साथ अहिंसा हो। अणुव्रत की आचार संहिता सबके लिए उपयोगी है। मानव मात्र का कल्याण हो सकता है। इससे हम स्वर्ग को ही धरती पर ला सकते हैं।

अणुव्रत की भावना और अणुव्रत के संकल्प जन-जन में आएँ। ताकि सबकी आत्मा अच्छी बने और समाज, राष्ट्र और विश्व भी अच्छा बने।

मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने कहा कि व्यक्ति दूसरों को दुखी देखकर कभी स्वयं सुखी नहीं हो सकता। जो व्यक्ति प्रामाणिक होता है, उसे सुख प्राप्त हो सकता है। पूज्य गुरुदेव तुलसी ने नैतिक मूल्यों और मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठापना के लिए अणुव्रत का प्रचार-प्रसार किया था। सन् १९६७ चातुर्मास में अहमदाबाद में गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत गीत की रचना की थी।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि कुछ गीतों का सामाजिक मूल्य होता है लेकिन कुछ गीत शाश्वत होते हैं, जिनमें मूल्यों के बारे में बताया जाता है। अणुव्रत गीत जो गुरुदेव तुलसी द्वारा रचित है, इसकी प्रासंगिकता पहले भी थी और आज भी है। हम इस गीत की आत्मा को समझें। व्यक्ति स्वयं पर स्वयं का अनुशासन करे।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि आदमी वह होता है, जिसमें इंसानियत, मानवीयता होती है। अणुव्रत हमें इंसानियत का पाठ सिखाता है। हमारे भीतर अच्छे संस्कार आएँ। हमारी इच्छाओं का परिमाण हो। जो व्यक्ति संस्कारों से उन्नत होता है, वह अपने को उच्च बना सकता है।

अणुव्रत आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि मनन कुमार जी ने कहा कि इस महासंगान का उद्देश्य था कि आने वाली पीढ़ी व्यवस्थित हो, संस्कारित हो, जिससे हमारा भविष्य उज्ज्वल बन सकेगा।

मानवाधिकार आयोग के जस्टिस के०के० तातेड़, ठाणे सभाध्यक्ष पवन ओस्तवाल, अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर, अणुविभा के मुख्य न्यासी तेजकरण सुराणा, भीखमचंद सुराणा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्य भिक्षु युग

○ **मुनि उदयरामजी (केलवा) दीक्षा क्रमांक ३७**

मुनिश्री प्रायः चातुर्मास में बेले-बेले तप और पारणे में आयंबिल करते थे। मुनिश्री ने आगम में वर्णित आयंबिल वर्धमान तप अपूर्ण किया। इस तप में एक आयंबिल, एक उपवास, फिर दो आयंबिल, एक उपवास, फिर तीन आयंबिल और एक उपवास, इस तरह एक सौ आयंबिल तक चढ़ना होता है। कुल ५०५० आयंबिल और १०० उपवास होते हैं। यह १४ वर्ष ३ महीने और २० दिन में संपन्न होता है।

मुनिश्री ने ४० आयंबिल की श्रेणी को पूर्णकर ४१वीं अवली में २१ आयंबिल किए, उसके बाद वे दिवंगत हुए। उनके इस तप में कुल ८४१ आयंबिल और ४१ उपवास हुए।

– : साभार : शासन समुद्र : –

तीन दिवसीय बाल संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन

तिरुवन्नामलाई।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्रीजी के सान्निध्य में एवं तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में तीन दिवसीय बाल संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन किया गया। तेरापंथ एवं जैन समाज के अनेक बच्चों ने भाग लिया। डॉ० साध्वी गवेषणाश्रीजी ने कहा कि बच्चे देश के कर्णधार हैं। बच्चों का स्वर्णिम भविष्य ही देश का शुभ भविष्य है। बच्चे कोरे कागज की तरह होते हैं और उनके माता-पिता एक अच्छे, सुंदर चित्रकार होते हैं तथा जो चाहें चित्र बना सकते हैं। बच्चों के लिए पहली प्राथमिकता उनके माता-पिता होते हैं।

ज्ञानशाला संस्कार निर्माण का मूल्यों के निर्माण का एक बड़ा माध्यम है। साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि जीवन की तीन अवस्थाएँ होती हैं, जिनमें पहली अवस्था है–बाल्यावस्था। यह चरण ज्ञान प्राप्त करने का है। एक बच्चा बचपन में जो सीखता है, वही उसके भविष्य को आकार देता है। बच्चे को कृष्ण या कंस, भगवान या कुत्ता, प्रभु या पशु बनाना माता-पिता के हाथ में है।

साध्वी दक्षप्रभा जी ने बच्चों के संस्कार संबंधित सुमधुर गीतिका की प्रस्तुति दी। सभा अध्यक्ष महावीर सेठिया ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मेरुप्रभा जी ने किया। घृति, प्रगति सेठिया, प्रशिक्षक नयना सेठिया ने विचार व्यक्त किए। प्रशिक्षण में साध्वीवृंद के अलावा खुशबू, सुरभि, नयना सेठिया, आशा पीपाड़ा आदि ने भी सहयोग किया।

आत्मा ही परम ऐश्वर्य संपन्न...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जैन धर्म में १८ पाप बताए गए हैं–प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, परपरिवाद, रति-अरति, मायामृषा, मिथ्यादर्शन शल्य–इनसे बचने का प्रयास होना चाहिए।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि कुछ लोग विद्वान होते हैं, कुछ योगी होते हैं, कुछ लोगों के पास प्रखर प्रतिभा होती है, किसी के पास शौर्य होता है, किसी का आचरण अच्छा होता है, कोई समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करता है, पर वे लोग विरल होते हैं, जो अपनी शक्ति को परोपकार में लगाते हैं। परोपकर वह व्यक्ति कर सकता है, जो अहिंसा-चेतना से ओतप्रोत होता है। आचार्यप्रवर भगवान महावीर के सिद्धांतों में प्रगाढ़ आस्था रखते हैं। हम अहिंसा की गहराई में जाकर मन से अहिंसक बने। आचार्यप्रवर के जीवन में करुणा की चेतना जागृत है। परोपकार करने वाला सबको प्रिय लगता है।

परमपूज्य के स्वागत में यहाँ के विधायक महेश प्रभाकर चौगुले, पूर्व विधायक रईस शेख, स्थानीय सभाध्यक्ष राजेंद्र बाफना, समस्त जैन महासंघ से मीठालाल जैन ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। ज्ञानशाला, तेममं एवं तेयुप की सुंदर प्रस्तुति हुई।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

F सत्य के मार्ग पर चलने में परेशानी आ सकती है, किंतु सच्चाई के मार्ग पर चलने से मिलने वाली मंजिल सुखद होती है।
–आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

'अनमोल रिश्ता सास-बहू का' कार्यशाला का आयोजन

सुजानगढ़।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं द्वारा सुजानगढ़ द्वारा 'अनमोल रिश्ता सास-बहू का' कार्यशाला का आयोजन शासनश्री साध्वी सुप्रभा जी के सान्निध्य में किया गया। सर्वप्रथम तेममं, सुजानगढ़ की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत से मंगलाचरण किया गया। तेममं की अध्यक्ष राजकुमारी भूतोड़िया द्वारा स्वागत वक्तव्य दिया गया।

सास-बहू के अनमोल रिश्तों की क्या अहमियत है इस पर कार्यकारिणी सदस्याएँ निशा डोसी व समता गोलछा ने एक छोटी-सी नाटिका के माध्यम से सुंदर प्रस्तुति दी। मुख्य अतिथि पार्षद जयश्री दाधीच ने सास-बहू के रिश्ते पर वक्तव्य दिया तथा अपने सास-बहू के अनुभवों को साझा किया।

साध्वी मनीषाश्री जी ने सास-बहू के रिश्ते को कैसे बेजोड़ बनाएँ इससे जुड़ी बातें सभी को सुझाई। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल की मंत्री डॉ० पूजा फुलफगर ने किया। आभार ज्ञापन संगठन मंत्री मंजु देवी बैद ने किया।

अणुव्रत गीत का महासंगान किया गया। पार्षद जयश्री दाधीच, कमल दाधीच, अणुव्रत समिति के सदस्यगण, ज्ञानशाला संयोजक संजय बोथरा और समस्त समाज से लगभग ७० भाई-बहनों की उपस्थिति रही।

राउरकेला।

अभातेममं द्वारा निर्देशित तेममं ने 'अनमोल रिश्ता सास-बहू का' कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत संपत भंसाली ने प्रेक्षाध्यान के द्वारा करवाई। ललिता भंसाली, सुनीता कोठारी एवं नीतू कोठारी ने सास-बहू के बीच के सामंजस्य बनाने के गुर सिखाए। मनीषा डोसी, स्नेहलता जैन, कोमल डोसी ने सास-बहू की मीठी नोक-झोंक पर छोटा सा नाटक प्रस्तुत किया।

सास-बहू के सामंजस्य की प्रतियोगिता रखी गई, जिसमें कनक बोथरा और मीनाक्षी बोथरा, सुरभि बोथरा, पुनिता बोथरा, प्रेरणा बुच्चा और सुनीता बुच्चा, दिव्या बोथरा और कुसुम बोथरा ने उत्साह से भाग लिया। कनक बोथरा और मीनाक्षी बोथरा की जोड़ी प्रथम स्थान पर रही। महिला मंडल की अध्यक्षा तरुलता जैन ने सभी का स्वागत किया। कविता दुगड़ ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन ज्योति भंसाली और सीमा जैन ने किया। कार्यक्रम में बहनों की अच्छी उपस्थिति रही।

कांटाबांजी।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं द्वारा तेरापंथ भवन में 'अनमोल रिश्ता सास-बहू का' कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। महिला मंडल की सदस्यों ने प्रेरणा गीत का संगान किया। कार्यक्रम में ६ सास-बहू की जोड़ी ने भाग लिया और छोटी-छोटी नाटिका के साथ अपने विचार प्रस्तुत किए।

सास-बहू का रिश्ता बनाए रखने के लिए एक-दूसरे को समझना बहुत जरूरी है। बहन स्मिता ने कहा कि सास और बहू दोनों को साथ में कदम बढ़ाना चाहिए जिससे परिवार में सामंजस्य बना रहे। अध्यक्षा आशा जैन ने स्वागत किया और अपने विचार व्यक्त किए। सभी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। ३० सदस्यों ने उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाया। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल की उपाध्यक्ष सपना जैन ने किया तथा मंत्री रितु जैन ने आभार व्यक्त किया।

महाश्रमण अष्टकम प्रतियोगिता का आयोजन

हैदराबाद।

तेममं के तत्त्वावधान में तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा मकर संक्रांति के अवसर पर महाश्रमण अष्टकम रंगोली एवं विशेष व्यंजन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

नमस्कार मंत्र के उच्चारण के साथ कार्यक्रम का प्रारंभ किया गया। जिसमें कन्या मंडल की कन्याओं के साथ-साथ अभिभावक एवं उत्साहवर्धन करने तेममं की अध्यक्षा कविता आच्छा, मंत्री सुशीला मोदी व महिला मंडल की बहनों की उपस्थिति रही।

प्रार्थना सुराणा, पूर्वी सुराणा, रितु धोका, लविशा जैन, सिद्धि पोखरणा, नैना पोखरणा, सुरभि जैन, छवि बंबोली, जीविका बैद, हंसिका जैन, मान्या दुगड़, प्रेक्षा श्यामसुखा आदि कन्याओं की उपस्थिति रही। इस प्रतियोगिता के निर्णायक कविता आच्छा व रेखा जैन ने सभी प्रतिभागियों को बधाई प्रेषित की। अष्टकम प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर सिद्धि पोखरणा, द्वितीय स्थान पर छवि जैन एवं तृतीय स्थान पर जीविका बैद रही। नैना पोखरणा को सांत्वना पुरस्कार दिया गया।

विशेष व्यंजन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान छवि बंबोली, द्वितीय स्थान हंसिका सुराणा एवं तृतीय स्थान सिद्धि पोखरणा, ऋतु धोका ने प्राप्त किया। शेष प्रतियोगियों को प्रमाण पत्र व सांत्वना पुरस्कार दिया गया।

रंगोली प्रतियोगिता में विषय मकर संक्रांति पर्व रखा गया था। कन्याओं ने सुंदर रंगोली बनाई, जिसमें समय सीमा रखी गई थी। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान ऋतु जैन, द्वितीय स्थान लविशा जैन एवं तृतीय स्थान पूर्वा सुराणा ने प्राप्त किया। मान्या दुगड़ को सांत्वना पुरस्कार दिया गया।

इस प्रतियोगिता की निर्णायक हेमलता लोढ़ा व प्रेक्षा जैन ने सभी प्रतिभागियों की प्रशंसा करते हुए अपना निर्णय बताया।

मिलेट्स व्यंजन प्रतियोगिता का आयोजन

अररिया कोर्ट।

अभातेममं के निर्देशानुसार महिला मंडल, अररिया कोर्ट द्वारा मिलेट्स प्रतियोगिता का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन में किया गया। जिसमें नवयुवती बहनों ने काफी उत्साह के साथ कार्यक्रम में भाग लिया।

कार्यक्रम की शुरुआत अध्यक्ष सरिता बेगवानी ने नमस्कार महामंत्र द्वारा की। तत्पश्चात मिलेट्स के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम में निर्णायक संतोष बरड़िया, ज्योति बोथरा, सरिता बेगवानी का निर्णय सर्वमान्य रहा। मिलेट्स प्रतियोगिता में प्रथम स्थान राज मालू, द्वितीय स्थान आस्था बेगवानी तथा तृतीय स्थान माला छाजेड़ को प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम को सफल बनाने में कांता बेगवानी की अहम भूमिका रही। कार्यक्रम का संचालन एवं सभी आगंतुकों के साथ प्रतियोगियों का आभार ज्ञापन मंत्री सुरभि दुगड़ ने किया। प्रतियोगिता में २० बहनों ने भाग लिया।

सेवा कार्य

सरदारपुरा।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं द्वारा वात्सल्यपुरम अनाथ आश्रम के ५ से १३ वर्ष आयु की २५ बालिकाओं को सहयोग सामग्री भेंट की गई।

कार्यक्रम में अध्यक्ष दिलखुश तातेड़, मंत्री चेतना घोड़ावत, निवर्तमान अध्यक्ष सरिता कांकरिया, सविता तातेड़, ममता सुराणा, संगीता जीरावला सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे।

--: संक्षिप्त समाचार :--

सेवा कार्य

साउथ हावड़ा।

तेयुप, साउथ हावड़ा द्वारा क्षेत्र के नवो जीवन आश्रम में १०० मानसिक विकलांग रोगियों हेतु सेवा कार्य कार्यक्रम का प्रारंभ तेयपु ने समूह मंत्रोच्चार के साथ किया। तेयुप के उपाध्यक्ष विक्रम भंडारी ने सभी का स्वागत किया।

कार्यक्रम में कार्यसमिति सदस्य नवीन सेठिया, सदस्य पवन कोठारी की उपस्थिति रही। प्रायोजक पवन कोठारी ने परिषद के प्रति आभार व्यक्त किया।

राजाजीनगर।

तेयुप, राजाजीनगर ने मकर संक्रांति के अवसर पर राजराजेश्वरी नगर स्थित सांत्वना सेवा ओल्ड एज होम में सेवा कार्य संपादित किया। वृद्धाश्रम के केयर टेकर वेंकटेश्वर ने ट्रस्ट की संक्षिप्त जानकारी दी।

तेयुप अध्यक्ष कमलेश गन्ना एवं तेयुप साथियों ने वृद्धजन के साथ समय व्यतीत किया। इस अवसर पर तेयुप से कमलेश चोरड़िया, राजेश देरासरिया, अरविंद कोठारी, जयंतीलाल गांधी की उपस्थिति रही।

उत्तर हावड़ा।

तेयुप, उत्तर हावड़ा एवं तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा स्व० अमराव देवी रेड़ की पुण्य स्मृति पर कमल सिंह, प्रकाश, दैविक रेड़ के सहयोग से अर्हम जल सेवा, हावड़ा ब्रिज के समीप जरूरतमंदों के बीच सेवा कार्य किया गया।

सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र का जाप किया गया। सेवा कार्य में उत्तर हावड़ा के श्रावक राकेश तातेड़, तेयुप के परामर्शक प्रवीण कुमार सिंघी, उपाध्यक्ष-प्रथम प्रकाश रेड़ सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे। कार्यक्रम के पर्यवेक्षक चंचल गोलछा, संयोजक अमित जैन, मनीष चोरड़िया, संदीप सेठिया, विवेक छाजेड़ रहे।

F हमारे जीवन में शरीर का महत्त्व है, वाणी का भी महत्त्व है और मन का भी महत्त्व है। शरीर, वाणी और मन पर संयम की लगाम रहती है तो वे हमारे लिए हितावह हो जाते हैं।

F गार्हस्थ्य में रहते हुए भी व्यक्ति आंशिक रूप में संयम को स्वीकार कर सकता है। अणुव्रत मध्यम मार्ग है। अणुव्रत का अर्थ है–छोटे-छोटे संकल्प। इसे स्वीकार करके भी मोक्ष की ओर कुछ अंशों में आगे बढ़ा जा सकता है।

– आचार्यश्री महाश्रमण

ज्ञानार्थी परीक्षा-२०२३ का आयोजन

सिकंदराबाद।

तेरापंथ महासभा, ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के अंतर्गत एवं तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के तत्त्वावधान में ज्ञानशाला ज्ञानार्थी परीक्षा-२०२३ का आयोजन किया गया। पूरे देश और विदेशी केंद्रों में एक साथ, एक समय में संचालित की जाने वाली इस वार्षिक परीक्षा में हैदराबाद में संचालित २३ ज्ञानशालाओं के कुल ६ परीक्षा केंद्र स्थापित किए गए। सिकंदराबाद तेरापंथी सभा के अध्यक्ष बाबूलाल बैद, महासभा बोर्ड सदस्य लक्ष्मीपत बैद व तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा कविता आच्छा, ज्ञानशाला की आंचलिक संयोजक सीमा दस्साणी, क्षेत्रीय संयोजिका संगीता गोलछा आदि गणमान्य पदाधिकारियों की उपस्थिति में हिमायत नगर सभा भवन में प्रश्न-पत्र खोले गए।

मुख्य परीक्षा व्यवस्थापक पुष्पा बरड़िया, परामर्शक अंजू बैद, क्षेत्रीय सह-संयोजिका यशोदा कोठारी, माधुरी लुणावत, सरिता नखत व महिला मंडल परामर्शदाता अर्पिता लोढ़ा व सभा के मंत्री सुशील संचेती आदि अनेक जनों की उपस्थिति में डी०वी० कॉलोनी भवन में प्रश्न-पत्रों का अनावरण हुआ।

अत्तापुर केंद्र में वीरेंद्र बैद व मनोज लुनिया, बोलारम केंद्र में अनिल नौलखा व रतनलाल सुराणा, शिवरामपल्ली केंद्र में राजेश कुंडलिया व तिलोकचंद सिपानी तथा हाईटेक सिटी केंद्र में प्रकाश बैद व विनोद सुराणा की उपस्थिति में प्रश्न-पत्र खोले गए।

तेलंगाना क्षेत्र में इन वार्षिक मौखिक परीक्षाओं में २६० ज्ञानार्थियों ने सहभागिता दर्ज कराई और आंध्रप्रदेश से ५ केंद्रों में ७७ ज्ञानार्थी परीक्षा में सहभागी बने। मूल्यांकन के इस अवसर पर पदाधिकारियों ने सभी के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित की।

आत्मबल के धनी बालक थे आचार्यश्री तुलसी

चंडीगढ़।

मात्र ११ वर्ष की अल्प आयु में गुरु के चरणों में अपना सर्वस्व समर्पण करने वाले बालक का नाम आचार्य तुलसी। ११ वर्ष तक गुरु के संरक्षण में रह अपना चहुँमुखी विकास करने वाले थे आचार्य तुलसी। बचपन से ही स्वच्छता प्रेमी, निर्भीक, मजबूत, दृढ़-संकल्पी, मजबूत मनोबल, आत्मबल के धनी बालक तुलसी के शुभ भविष्य को गुरु कालूगणी ने परख लिया। मात्र २२ वर्ष की उम्र में गुरु ने अपने युवा शिष्य तुलसी को युवाचार्य पद का दायित्व दिया। आचार्य तुलसी ने अपना पूरा जीवन साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाओं के निर्माण में, जन-जन का जीवन नैतिक बनाने के लिए लगा दिया। यह विचार मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने तेरापंथ भवन में आचार्य तुलसी के दीक्षा दिवस समारोह में व्यक्त किए।

मुनिश्री ने कहा कि आचार्य तुलसी अपने प्रवचन में गूढ़ तथ्यों को इतनी सरलता से समझाते थे कि सामान्य व्यक्ति को भी वे आसानी से समझ में आ जाते थे। प्रखर बुद्धि एवं वक्तृत्व कौशल के धनी आचार्य तुलसी आचरण व व्यवहार को भी अध्यात्म जितनी ही प्राथमिकता देते थे। इसलिए उनके प्रवचन एवं वार्तालाप में दैनंदिन जीवन की समस्याओं एवं उनके समाधान की चर्चा भी होती थी।

मुनिश्री ने आगे कहा कि अणुव्रत लोगों में नैतिकता जगाने का आंदोलन था। अणु का अर्थ है छोटा और व्रत अर्थात संकल्प। आचार्यश्री का मत था कि हम यदि जीवन में छोटा सा व्रत लेकर उसका निष्ठा से पालन करें, तो न केवल अपना अपितु परिवार एवं आसपास वालों का जीवन भी बदल जाता है। अणुव्रत के प्रचार-प्रसार के लिए उन्होंने व्यापक भ्रमण किया।

शिशु संस्कार बोध परीक्षा का माणक गणि जॉन ज्ञानशाला द्वारा आयोजन

गोरेगाँव।

माणक गणी जॉन ज्ञानशाला प्रकोष्ठ द्वारा एवं मुंबई तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में ज्ञानशाला शिशु संस्कार बोध ज्ञानार्थी परीक्षा-२०२४ संपन्न हुई। परीक्षा की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई। सबसे पहले बच्चों को नौ बार महाप्राण ध्वनि करवाई गई।

तेरापंथ सभा अध्यक्ष चतरलाल सिंघवी, महिला मंडल की सह-संयोजिका ममता चिप्पड़, माणक गणि जॉन की सह-संयोजिका भावना सांखला एवं संतोष नगर और जोगेश्वरी की सभी प्रशिक्षिकाओं की उपस्थिति में प्रश्न पत्र खोले गए। परीक्षा लेने संतोष नगर से चार प्रशिक्षिकाएँ–मीना धींग, ललिता कोठारी, कल्पना चोरड़िया एवं कविता सिंघवी आए और जोगेश्वरी से तीन प्रशिक्षिकाएँ–सीमा सिंघवी, सविता वड़ाला आदि आए। ज्ञानशाला परिवार द्वारा सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई।

गोरेगाँव से २६ बच्चों ने एवं जोगेश्वरी से ६ बच्चों ने परीक्षा दी। ज्ञानशाला परिवार से अल्का आच्छा एवं अंजू चंडालिया, संतोष नगर परीक्षा लेने हेतु गए। मंजू सिंघवी एवं भावना सांखला ने सारी व्यवस्था संभाली। ज्ञानार्थी, प्रशिक्षक, अभिभावकगण, पदाधिकारीगण आदि की उपस्थिति रही।

ज्ञानशाला परीक्षा का आयोजन

अमराईवाड़ी।

ज्ञानशाला में ज्ञानार्थी के परीक्षा के पेपर अध्यक्ष रमेश पगारिया एवं ज्ञानशाला संयोजक राजेंद्र बाफना के द्वारा खोले गए। सभा अध्यक्ष रमेश पगारिया ने सभी बच्चों को परीक्षा की शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए बच्चों को पूर्ण आत्मविश्वास के साथ परीक्षा देने की प्रेरणा दी। मुख्य प्रशिक्षिक सेजल मांडोत ने ज्ञानशाला की संक्षिप्त जानकारी प्रेषित की। शिशु संस्कार बोध भाग-१ से ५ की वार्षिक परीक्षा ली गई, जिसमें २० बच्चों ने परीक्षा दी। सभी ज्ञानार्थियों ने प्रमाणिकता के साथ परीक्षा दी। सभी प्रशिक्षिकाओं का अच्छा सहयोग रहा।

जैन संस्कार विधि

laLd`frdlaj{k.k&laLdkjksadk lao)ZutSufof/k&vewY;fuf/k

नूतन गृह प्रवेश

हैदराबाद।

बीदासर निवासी, हैदराबाद प्रवासी स्व० भीकमचंद बैद के पुत्र लक्ष्मीपत बैद एवं महेंद्र बैद का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक ललित जैन ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

तेयुप द्वारा बैद परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया। इस अवसर पर तेयुप अध्यक्ष निर्मल दुगड़ ने शुभकामनाएँ प्रेषित की।

अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन

दिल्ली।

अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के तत्त्वावधान में अणुव्रत समिति ट्रस्ट, दिल्ली द्वारा वृहद स्तर पर अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में हिंदी भवन में किया गया। कार्यक्रम में दिल्ली के ५ गणमान्य कवि व दिल्ली एसीसी कॉन्टेस्ट, दिल्ली की राज्य स्तरीय प्रथम विजेता गुंजन दत्ता ने भी अपनी सहभागिता दर्ज कराई। अणुविभा के मुख्य न्यासी तेजकरण सुराणा, अणुविभा महामंत्री भीखमचंद सुराणा, दिल्ली समिति अध्यक्ष मनोज बरमेचा, मंत्री राजेश बैंगानी, अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के व्यवस्थापक प्रभारी शांति कुमार जैन, दिल्ली सभा अध्यक्ष सुखराज सेठिया, महामंत्री प्रमोद घोड़ावत, अणुविभा संगठन मंत्री डॉ० कुसुम लुनिया, काव्यधारा राष्ट्रीय संयोजक डॉ० धनपत लुनिया व निवर्तमान अध्यक्ष शांतिलाल पटावरी आदि ने मंगलकामना कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

अणुविभा के कार्यसमिति सदस्य सुरेंद्र नाहटा, समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष कमल बैंगानी, संगठन मंत्री राजीव महनोत आदि ने अणुव्रत गीत का संगान किया। दिल्ली समिति अध्यक्ष मनोज बरमेचा ने आए हुए सभी का स्वागत और आभार अपने स्वागत भाषण में किया। सम्मानीत कवियों ने अपने कविता की रोचक प्रस्तुतियाँ प्रस्तुत की।

साध्वी अणिमाश्री जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि अणुव्रत समाज की दिशा बदल सकता है। कवि भी अपनी कविता के माध्यम से इसमें सहयोग कर सकते हैं। अणुव्रत समिति, दिल्ली हर जाति, वर्ग, संप्रदाय में अणुव्रत की चेतना जगाने का सराहनीय कार्य कर रही है। साध्वीश्रीजी के मंगल उद्‌बोधन के पश्चात कवि डॉ० रसिक गुप्ता ने गुरुदेव तुलसी की अभिवंदना में अपनी रचना से सबको मोहित किया।

एसीसी कॉन्टेस्ट की विजेता रही गुंजन दत्ता ने नारी की व्यथा को रेखांकित करते हुए सुंदर प्रस्तुति से सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। कवि डॉ० रसिक गुप्ता, डॉ० सत्येंद्र सत्यार्थी, सरला मिश्रा, सुनहरी लाल 'तुरंत' आदि कवियों का परिचय कवि विनय विनम्र ने दिया।

कार्यक्रम का संचालन समिति के कार्यकारिणी सदस्य प्रदीप संचेती ने किया। सभी कवियों का स्वागत समिति के पदाधिकारियों, सदस्यों तथा पधारे गणमान्य व्यक्तियों द्वारा किया गया। सोशल मीडिया जैन तेरापंथ न्यूज पर कार्यक्रम को प्रसारित करने में समिति के मीडिया प्रभारी ऋषभ बैद का सहयोग रहा। कार्यक्रम में कल्याण परिषद संयोजक के०सी० जैन, अणुव्रत न्यास के निवर्तमान न्यासी संपत नाहटा, अणुव्रत महासमिति पूर्व अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा व अशोक संचेती, उत्तरी दिल्ली महिला मंडल की अध्यक्षा मधु सेठिया, समिति संरक्षक मन्नालाल बैद, बाबूलाल दुगड़, अनिल दत्त मिश्रा, सहमंत्री पवन गिडिया, कोषाध्यक्ष विनोद चोरड़िया, प्रचार मंत्री दिनेश शर्मा, रवि शर्मा, कमल-कल्पना सेठिया, नगराज बुच्चा, राज कुमार बरड़िया, मनीष महनोत, प्रदीप चोरड़िया व तेजकरण बैद तथा अन्य कई कार्यकर्ताओं का श्रम लगा। आयोजन में विजया देवी, विकास विनीत मालू का सहयोग प्राप्त हुआ। आभार ज्ञापन कार्यक्रम संयोजक चंद्रकांत कोठारी ने किया।

संबोधि

आचार्य महाप्रज्ञ

बंध-मोक्षवाद

ज्ञेय-हेय-उपादेय

भगवान् प्राह

बारह भावनाएँ

(२) **प्रमोद भावना–** प्रमोद का अर्थ है–प्रसन्नता। जो स्वयं में प्रसन्न नहीं होता, प्रमोद भावना को समझना उसके लिए कठिन होता है। जो अपना मित्र बनता है, वही प्रमोद-प्रसन्न रह सकता है। जिसकी अपने में प्रसन्नता है उसकी सर्वत्र प्रसन्नता है। वह अप्रसन्नता को देखता नहीं। अपने से जो राजी नहीं है, वही दूसरों के दोष देखता है, दूसरों की प्रसन्नता–विशिष्टता से ईर्ष्या करता है। दूसरों के गुणों को देखकर व्यकित स्वयं का प्रमोद भावना के द्वारा कितना ही भावित करे, किंतु ईर्ष्या की ग्रंथि खुलनी कठिन है, भले ही कुछ देर के लिए मन को तृप्त कर ले। जिसे ईर्ष्या से मुक्त होना है उसे सतत प्रसन्नता का जीवन जीना चाहिए। यह कोई असंभव नहीं है। जो कुछ प्राप्त है, उसमें सदा प्रसन्न रहे। अतृप्ति को पास फटकने न दे। जैसे-जैसे हम अपने से राजी होते जाएँगे, कोई वासना नहीं रहेगी। तब सहज ही दूसरों की विशेषताएँ या अविशेषताएँ हमारे लिए कोई महत्त्वपूर्ण नहीं होंगी। विशेषताएँ जहाँ प्रसन्नता के लिए होंगी वहाँ अविशेषताएँ करुणा उत्पन्न करेंगी। जैसे एक व्यक्ति विकास के चरम पद को पा सकता है वैसे दूसरा भी पा सकता है, किंतु वह अपने को गलत दिशा में नियोजित कर रहा है, इसलिए करुणा का पात्र है। स्वयं में प्रसन्न रहना सीखें, फिर दूसरों से अप्रसन्नता भी नहीं आएगी और दूसरों के गुणों के उत्कर्ष से अप्रसन्नता भी नहीं होगी।

(३) **करुणा भावना–** करुणा मैत्री का प्रयोग है। जिसका सब जगत् मित्र है, उसकी करुणा भी जागतिक हो जाती है। उस करुणा का संबंध पर-सापेक्ष नहीं होता। वह भीतर का एक बहाव है जो प्रतिपल सरिता की धारा की तरह प्रवाहित रहता है। महावीर, बुद्ध, जीसस आदि संत इसके अनन्यतम उदाहरण हैं। महायान बौद्ध कहते हैं–बुद्ध का निर्वाण हुआ। वे निर्वाण के द्वार पर रुक गए। कहा–भीतर आओ। बुद्ध कहते हैं–जब तक समस्त प्राणी दुःख से मुक्त नहीं होते तब तक मैं भीतर कैसे आ सकता हूँ? प्रेम का हृदय-सागर जब छलछला जाता है, तब करुणा की ऊर्मियाँ तट पर टकराने लगती हैं। जितने भी संत बोले हैं, वे सब प्रेम मैत्री के मूर्त्त रूप थे। और वह प्रेम करुणा के माध्यम से वाणी के द्वारा बाहर बहा है।

अमेरिकन विचारक हेनरी थारो से एक व्यक्ति मिलने के लिए आया। हाथ मिलाया और तत्क्षण हेनरी ने हाथ छोड़ दिया। कहा–यह हाथ जीवंत नहीं है, मृत है। इसमें प्रेम, करुणा, सौहार्द, सहानुभूति नहीं है। यह उदात्त प्रेम की सूचना है। करुणा, सौहार्द आदि गुण मनुष्य की आंतरिक चेतना की शुद्धि का प्रतिनिधित्व करते हैं।

हजरत उमर ने एक व्यक्ति को किसी प्रांत का गवर्नर नियुक्त किया। नियुक्ति पत्र लिखा और आवश्यक सूचना दी। इतने में एक छोटा बच्चा आ गया। हजरत उसे प्रेम करने लगे। उसने कहा, 'मेरे दस बच्चे हैं, किंतु मैंने इतना प्रेम और इस प्रकार आलाप-संलाप कभी नहीं किया।' हजरत ने वह नियुक्त-पत्र वापस लेकर फाड़ते हुए कहा–'जब तुम अपने बच्चों से भी प्रेम नहीं कर सकते, तब प्रजा से प्रेम की आशा मैं कैसे करूँ?

एक संत के पास एक व्यक्ति संन्यासी बनने आया। संत ने पूछा–'क्या तुम किसी से प्रेम करते हो?' उसने कहा–'आप क्या बात कर रहे हैं? मेरा किसी से प्रेम नहीं है।' संत ने कहा–'तब मुश्किल है। प्रेम अगर हो तो उसे व्यापक बनाया जा सकता है, किंतु है ही नहीं, तब मैं क्या करूँ?' प्रेम, करुणा, सहानुभूति ये अंतस्तल के सूचना-संस्थान हैं। दुखी, पीड़ित, त्रस्त व्यक्ति को देखकर जो करुणा का भाव जागृत होता है वह यह सूचना है कि आपका चित्त कोमल, मृदु और प्रेम से शून्य नहीं है। उसी करुणा को आत्मा से जोड़ना है, दुःख के कारणों को मिटाना है, जिससे अनंत करुणा का जन्म हो सके।

(क्रमशः)

श्रमण महावीर

आचार्य महाप्रज्ञ

जीवनवृत्त : कुछ चित्र, कुछ रेखाएँ

आमलकी क्रीड़ा

कुमार वर्द्धमान आठवें वर्ष में चल रहे थे। शरीर के अवयव विकास की दिशा खोज रहे थे। यौवन का क्षितिज अभी दूर था। फिर भी पराक्रम का बीज प्रस्फुटित हो गया। क्षात्र तेज का अभय साकार हो गया।

एक बार वे बच्चों के साथ 'आमलकी' नामक खेल खेल रहे थे। यह खेल वृक्ष को केंद्र मानकर खेला जाता था। खेलने वाले सब बच्चे वृक्ष की ओर दौड़ते। जो बच्चा सबसे पहले उस वृक्ष पर चढ़कर उतर आता वह विजेता माना जाता। विजेता बच्चा पराजित बच्चों के कंधों पर बैठकर दौड़ के प्रारंभ बिंदु तक जाता।

कुमार वर्द्धमान सबसे आगे दौड़ पीपल के पेड़ पर चढ़ गए। उनके साथ-साथ एक साँप भी चढ़ा और पेड़ के तने से लिपट गया। बच्चे डरकर भाग गए। कुमार वर्द्धमान डरे नहीं। वे झट से नीचे उतरे, उस साँप को पकड़कर एक ओर डाल दिया।

अध्ययन

कुमार वर्द्धमान प्रारंभ से ही प्रतिभा-संपन्न थे। उनका प्रातिभ ज्ञान बौद्धिक ज्ञान से बहुत ऊँचा था। उन्हें अतीन्द्रियज्ञान की शक्ति प्राप्त थी। वे दूसरों के सामने उसका प्रदर्शन नहीं करते थे। वे आठ वर्ष की अवस्था को पार कर नौवें वर्ष में पहुँचे। माता-पिता ने उचित समय देखकर उन्हें विद्यालय में भेजा। अध्यापक उन्हें पढ़ाने लगा। वे विनयपूर्वक उसे सुनते रहे।

उस समय एक ब्राह्मण आया। विराट् व्यक्तित्व और गौरवपूर्ण आकृति। अध्यापक ने उसे ससम्मान आसन पर बिठाया। उसने कुमार वर्द्धमान से कुछ प्रश्न पूछे–अक्षरों के पर्याय कितने हैं? उनके भंग (विकल्प) कितने हैं? उपोद्घात क्या है? आक्षेप और परिहार क्या है? कुमार ने इन प्रश्नों के उत्तर दिए। प्रश्नों की लंबी तालिका प्राप्त है, पर उत्तर अप्राप्त। इस विश्व में यही होता है, समस्याएँ रह जाती हैं, समाधान खो जाते हैं।

कुमार के उत्तर सुन अध्यापक के आश्चर्य की सीमा नहीं रही। बहुत पूछने पर यह रहस्य अनावृत्त हो गया कि वर्द्धमान को जो पढ़ाया जा रहा है वह उन्हें पहले से ही ज्ञात है। अध्यापक के अनुरोध पर वे पहले दिन ही विद्यालय से मुक्त हो गए।

हम वर्तमान को अतीत के आलोक में नहीं पढ़ते तब केवल व्यक्तित्व की व्याख्या करते हैं, उसकी पृष्ठभूमि में विद्यमान अस्तित्व को भुला देते हैं।

हम वर्तमान को भविष्य के आलोक में नहीं पढ़ते तब केवल उत्पत्ति की व्याख्या करते हैं, उसकी निष्पत्ति को भुला देते हैं।

वर्तमान में अतीत के बीज को अंकुरित करने और भविष्य के बीज को बोने की क्षमता है। जो व्यक्ति इन दोनों क्षमताओं को एक साथ देखता है वह व्यक्तित्व और अस्तित्व को तोड़कर नहीं देखता, उत्पत्ति और निष्पत्ति को विभक्त कर नहीं देखता, वह समग्र को समग्र की दृष्टि से देखता है। समग्रता की दृष्टि से देखने वाला आठ वर्ष की आयु में घटित होने वाली घटना का बीज आठ वर्ष की अवधि में नहीं खोजता। उसकी खोज सुदूर अतीत तक पहुँच जाती है। कुमार वर्द्धमान के प्रातिभज्ञान को आनुवंशिकता और मस्तिष्क की क्षमता के आधार पर नहीं समझा जा सकता। उसे अनेक जन्मों की शृंखला में हो रही उत्क्रांति के संदर्भ में ही समझा जा सकता है।

सन्मति

भगवान् पार्श्व की परंपरा चल रही थी। उनके हजारों शिष्य वृहत्तर भारत और मध्य एशियाई प्रदेशों में विहार कर रहे थे। उनके दो शिष्य क्षत्रियकुंड नगर में आए। एक का नाम था संजय और दूसरे का विजय। वे दोनों चारण-मुनि थे। उन्हें आकाश में उड़ने की शक्ति प्राप्त थी। उनके मन में किसी तत्त्व के विषय में संदेह हो रहा था। वे उसके निवारण का प्रयत्न कर रहे थे, पर वह हो नहीं सका। वे सिद्धार्थ के राज-प्रासाद में आए। शिशु वर्द्धमान को देखा। तत्काल, उनका संदेह दूर हो गया। उनका मन पुलकित हो उठा। उन्होंने वर्द्धमान को 'सन्मति' के नाम से संबोधित किया।

प्रश्न का ठीक उत्तर मिलने पर संदेह का निवर्तन हो जाता है। यह संदेह-निवर्तन की साधना पद्धति है। कभी-कभी इससे भिन्न असाधारण घटना भी घटित होती है। महान् अहिंसक की सन्निधि प्राप्त होने पर जैसे हिंसा का विष अपने आप धुल जाता है, प्रज्वलित वैर मैत्री में बदल जाता है, वैसे ही अंतर के आलोक से आलोकित आत्मा की सन्निधि प्राप्त होने पर मन के संदेह अपने आप समाधान में बदल जाते हैं।

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

प आचार्य महाश्रमण प

उपयोगिता अचेतन की

जिस जगत् में हम जी रहे हैं, वह जीवात्मक और अजीवात्मक है। ऐसा भी स्थान है, जहाँ जीव नहीं हैं, केवल अजीव द्रव्य है। परंतु ऐसा कहीं भी, कभी भी नहीं हो सकता कि केवल जीव है और अजीव द्रव्य का अस्तित्व ही नहीं है। ऐसा उल्लेख भी असंगत नहीं लगता कि अल्पबहुत्व की मार्गणा की जाए तो जीव अल्प हैं, अजीव धिक हैं। जीव की प्रवृत्तियाँ और निवृत्तियाँ अजीव के सहयोग के बिना निष्पन्न नहीं हो सकती। सिद्ध जीवों के लिए भी अजीव की उपयोगिता है, आवश्यकता है।

जीव से ठीक विपरीत परिभाषा अजीव की है। जिसमें चैतन्य न हो, जानने की प्रवृत्ति न हो, अनुभूति न हो, वह अजीव है। जीव और अजीव ये दोनों एक-दूसरे से विपरीत दीखने वाले पदार्थ हैं। यह पारस्परिक वैपरीत्य एक पहलू का है। यह इनके अपने-अपने विशेष गुण की अपेक्षा से है। अन्य अनेक गुण ऐसे भी हैं, जिनके परिप्रेक्ष्य में देखें तो जीव और अजीव में साम्य और ऐक्य भी है।

गुण का अर्थ है वस्तु का सहभावी (सदा साथ में रहने वाला) धर्म। वह दो प्रकार का होता है–(१) सामान्य गुण, (२) विशेष गुण। जो गुण सब द्रव्यों में पाया जाता है, वह सामान्य गुण है। जो गुण सब द्रव्यों में नहीं पाया जाता, किसी एक अथवा कुछ द्रव्यों में पाया जाता है, वह विशेष गुण है। सामान्य गुणों के आधार पर जीव और अजीव में कोई भेद नहीं किया जा सकता। अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व, प्रमेयत्व, प्रदेशवत्त्व और अगुरुलघुत्व–ये छह सामान्य गुण जीव और अजीव दोनों में पाए जाते हैं। चेतनत्व और अचेतनत्व, जो कि विशेष गुण हैं, के आधार पर जीव और अजीव में भिन्नता का दर्शन किया जा सकता है। जीव और पुद्गल का अमूर्त्त अजीव द्रव्यों के साथ अविच्छिन्न संबंध हैं। जीव और पुद्गल द्रव्यों पर अमूर्त्त अजीव द्रव्यों का सहज उपकार है।

धर्मास्तिकाय एक ऐसा अजीव द्रव्य है जो अमूर्त्त (अरूपी) है, पूरे लोक में फैला हुआ है। इसका कार्य है गति-क्रिया में सहयोग करना। इसकी सहायता के बिना जीव और पुद्गल गति नहीं कर सकते। एक अंगुली का मुझना भी तभी संभव है जब धर्मास्तिकाय का सहयोग मिलता है और सहयोग न मिलने का लोक भी सीमा में कोई प्रश्न ही नहीं है। हमारा सोचना-विचारना, चलना-फिरना, बोलना जो भी स्पंदन-कंपन होता है, वह सारा का सारा धर्मास्तिकाय के सहयोग से होता है। हमारा कितना बड़ा उपकारक है धर्मास्तिकाय। यह स्वयं असंख्येय प्रदेश वाला और स्थित द्रव्य है। यह स्वयं अगतिशील है, किंतु दूसरों के गतिशील बनने में इसकी परम भूमिका रहती है। यह इतना ही बड़ा है, जितना यह लोकाकाश है। यह उदासीन व तटस्थ भाव से सहयोग देता है। यह न तो किसी को चलने के लिए प्रेरित करता है और न किसी को निषेध करता है। जैसे मछली की गति में जल सहायक बनता है वैसे ही जीव और पुद्गल को गति में धर्मास्तिकाय सहायक बनता है।

छह द्रव्यों में दूसरा अजीव द्रव्य है अधर्मास्तिकाय। यह गुणात्मकता और उपयोगिता की दृष्टि से धर्मास्तिकाय से ठीक उलटा है। धर्मास्तिकाय गति में सहायक बनता है, अधर्मास्तिकाय स्थिति (ठहराव, गतिनिवृत्ति) में सहायक बनता है। शरीर की क्रिया, वचन की क्रिया और मन की क्रिया–इनके निरोध में अधर्मास्तिकाय का सहयोग रहता है। पुद्गलों की स्थिरता में भी उसी का सहयोग रहता है। यह भी धर्मास्तिकाय की भाँति असंख्येय प्रदेश वाला, अमूर्त्त और लोकव्यापी है। आतप से संतप्त पथिक के लिए छाया विश्राम में सहयोगी बनती है, इसी प्रकार जीव और पुद्गल की स्थिति में अधर्मास्तिकाय सहयोगी बनता है।

तीसरा अजीव द्रव्य है आकास्तिकाय। क्षेत्र की दृष्टि से सर्वाधिक विशाल द्रव्य यही है। ऐसा कोई स्थान ही नहीं है, जहाँ आकाशास्तिकाय न हो। स्थान स्वयं आकाशास्तिकाय है। यह लोक और अलोक अभयत्र व्याप्त है। यह सर्वव्यापी और एकाकार है, अखंड है। आत्मा और परमात्मा भी इतना व्यापी नहीं है, जितना व्यापी आकाशास्तिकाय है। समझने के लिए इसको दो भागों में बाँटा जा सकता है–लोकाकाश और अलोकाकाश। इसका कार्य है अवकाश देना, भाजनभूत बना रहना। जो भी जीव या जड़ पदार्थ हैं, सब इसी में समाविष्ट हैं, सबका आधार यही है।

धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय का सहयोग हमारे लिए अप्रत्यक्ष है, पुद्गल का हमारे पर जो उपकार है, वह प्रत्यक्ष भी है। खाने-पीने, सोने-बैठने, बोलने-सोचने और श्वासोच्छवास आदि में हमें पुद्गल-जगत् का सहयोग मिलता है। हमारा जीवन पुद्गल-सापेक्ष है। यह स्थूल शरीर स्वयं पुद्गल है और हमारा संचालक कर्मशरीर भी पुद्गल है। जीव भोक्ता है, पुद्गल उपभोग्य है। जीवयुक्त हमारा शरीर भोक्ता है और पुद्गल भोग्य। शुद्ध जीव (सिद्ध-मुक्त) को पुद्गलनिरपेक्ष और अशुद्ध (संसारी) जीव को पुद्गलसापेक्ष कहा जा सकता है।

पुद्गलास्तिकाय का अस्तित्व लोक में ही है। द्रव्य (वस्तु संख्या) की दृष्टि से यह अनंत है। यह धर्मास्तिकाय आदि की भाँति एक और अखंड नहीं है। इसके दो प्रकार हैं–परमाणु और स्कंध। पुद्गल की लघुतम, अविभाज्य और स्वतंत्र इकाई परमाणु है। उसके अतिरिक्त सभी पुद्गल स्कंध है।

(क्रमशः)

अणुव्रत के ७५ वर्ष की संपन्नता पर हीरक जयंती का कार्यक्रम

गंगाशहर।

तेरापंथ धर्मसंघ के नवम अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया। अणुव्रत के ७५ वर्ष की संपन्नता पर हीरक जयंती का कार्यक्रम अणुव्रत समिति के तत्त्वावधान में मुनि श्रेयांस कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में मनाया गया। नवकार महामंत्र के उच्चारण के साथ मुनिश्री ने गीत का संगान किया। इस अवसर पर मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' ने कहा कि वटवृक्ष बहुत ही विशाल होता है, किंतु बीज का आकार बहुत ही छोटा होता है। उसी प्रकार अणुव्रत आचार संहिता के छोटे-छोटे नियम मानवता के कल्याण में महत्त्वपूर्ण है। राष्ट्र का नवनिर्माण राष्ट्र की बाल पीढ़ी पर निर्भर है। आवश्यकता है सुसंस्कारित भावी पीढ़ी का नव निर्माण हो।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि लालेश्वर महादेव मंदिर के अधिष्ठाता विमर्शानंद गिरी ने कहा कि मनुष्य योनी सर्वोत्तम है। हमें मानवता के कल्याण में अपना सर्वस्व योगदान करके जीवन को अणुव्रतों के साथ जीने का प्रयास करना चाहिए। महापौर सुशील कंवर राजपुरोहित ने कहा कि बच्चे इस देश का भविष्य हैं। अणुव्रत के छोटे-छोटे संकल्पों से इनके अच्छे भविष्य का निर्माण संभव है। समिति के संयोजक किशन बैद के अनुसार कार्यक्रम में विभिन्न संस्थाओं की ओर से जिसमें तुलसी शांति प्रतिष्ठान की ओर से अध्यक्ष हंसराज डागा, तेरापंथ सभा से मंत्री रतन छल्लाणी, तेरापंथ न्यास से जतन दुगड़, महासभा के सदस्य भैरुदान सेठिया, महिला मंडल अध्यक्षा संजू लालाणी, तेयुप अध्यक्ष अरुण नाहटा, धर्मेन्द्र डाकलिया ने विचार व्यक्त किए।

अणुव्रत समिति अध्यक्ष भंवरलाल सेठिया ने बताया कि गंगाशहर समिति की ओर से लगभग १२२ स्कूलों, कॉलेजों तथा सार्वजनिक स्थानों पर अणुव्रत गीत गायन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। विभिन्न स्कूलों से लगभग ३०० छात्र-छात्राओं ने कार्यक्रम में भाग लिया। विद्यालयों को स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया। अमरचंद सोनी, माणक सामसुखा, राजेंद्र नाहटा, नारायण गुलगुलिया, अनुपम सेठिया, शिखर सेठिया, शारदा डागा ने महानुभावों को दुपट्टा, स्मृति चिह्न व साहित्य प्रदान कर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत समिति के मंत्री मनीष बाफना ने किया। आभार ज्ञापन प्रभारी गिरीराज खेरिवाल ने किया।

दंपत्ति शिविर का आयोजन

नानदेश्मा, सेराप्रांत, राजस्थान।

साध्वी परमप्रभा जी के सान्निध्य में दंपत्ति शिविर का आयोजन रखा गया। जिसमें काफी संख्या में दंपत्ति उपस्थित रहे। साध्वीश्री जी ने उपस्थित दंपत्तियों को दाम्पत्य जीवन कैसे सुखी बन सके, आपसी सौहार्द, समन्वय तथा सहनशीलता का जीवन में कैसे विकास हो सके, जिससे स्वयं सुखी रहते हुए संस्कारी परिवार का निर्माण कर सकें, की प्रेरणा दी। साथ ही संघ एवं संघपति के प्रति आस्था रखते हुए अपने जीवन का विकास कैसे हो आदि अनेक जानकारी प्रदान करवाई।

साध्वी श्रेयसप्रभा जी ने भी विषय के संदर्भ में प्रेरणा प्रदान करते हुए ध्यान आदि के प्रयोग करवाए। सभी दंपत्ति ने अपने अनुभव प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन साध्वी श्रेयसप्रभा जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
/ 29 tuojh&4 Qjojh] 2024

F भलाई का काम करो, भगवान की सच्ची भक्ति हो जाएगी। तुम्हें अच्छी शक्ति मिल जाएगी।

–आचार्य श्री महाश्रमण

अभिनव सामायिक फेस्टिवल के विविध आयोजन

शाहीबाग, अहमदाबाद

शासनश्री साध्वी सरस्वती जी के सान्निध्य में अभिनव सामायिक का कार्यक्रम करवाया गया। इस अवसर पर तेरापंथी सभा, अहमदाबाद, तेममं, अणुव्रत समिति, टीपीएफ आदि संस्थाओं के अध्यक्ष एवं पदाधिकारीगण, कार्यसमिति सदस्यों, समाज के गणमान्य व्यक्तियों की अच्छी संख्या में उपस्थिति रही।

साध्वीश्री जी ने अभिनव सामायिक के प्रयोग करवाए। तेरापंथ भवन, शाहीबाग में ३५० से भी अधिक श्रावक समाज ने अभिनव सामायिक करके समता की साधना की।

कांकरिया मणिनगर

शासनश्री साध्वी रामकुमारी जी के सान्निध्य में अभिनव सामायिक का आयोजन किया गया। इस अवसर पर तेरापंथी सभा, कांकरिया-मणिनगर के अध्यक्ष एवं पदाधिकारी गण के साथ विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारीगण, सदस्यों एवं समाज के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही। अभातेयुप पंच मंडल सदस्य अशोक लुनिया, तेयुप अहमदाबाद के मंत्री, कार्यसमिति सदस्य की उपस्थिति रही।

साध्वीश्री जी ने विधिवत अभिनव सामायिक के प्रयोग करवाए। लगभग १०० श्रावक-श्राविकाओं ने सामायिक कर कर्म निर्जरा की।

अहमदाबाद, पश्चिम क्षेत्र

डॉ० मुनि मदनकुमार जी के सान्निध्य में अभिनव सामायिक के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में तेरापंथी सभा, अहमदाबाद पश्चिम के अध्यक्ष एवं पदाधिकारीगण के साथ-साथ तेममं, अणुव्रत समिति, टीपीएफ आदि संस्थाओं के पदाधिकारीगण, कार्यसमिति सदस्यों एवं समाज के गणमान्य व्यक्तियों की अच्छी संख्या में उपस्थिति रही।

मुनि मदनकुमार जी ने अभिनव सामायिक के प्रयोग करवाए। लगभग १५० श्रावक-श्राविकाओं ने सामायिक कर कर्म निर्जरा की।

कार्यक्रम को सफल बनाने में सामायिक के संयोजक, सह-संयोजक, तेयुप, अहमदाबाद के पदाधिकारीगण का सराहनीय श्रम रहा।

सप्ताह के विशेष दिन

7 Qjojh] 2024 — Hkxoku 'khryukFk tUe ,oa rh{kk dY;k.kd

8 Qjojh] 2024 — Hkxoku_'kHk fuokZ.k dY;k.kd

9 Qjojh] 2024 — Hkxoku Js;kalukFk dsoyKku dY;k.kd] iD[kh

11 Qjojh] 2024 — Hkxoku vfHkuanu tUe dY;k.kd] Hkxoku oklqiwT; dsoyKku dY;k.kd

नशामुक्ति का संदेश

राजरहाट, कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में और ऑर्कीड इंटरनेशनल स्कूल के बच्चों के मध्य महाप्रज्ञ महाश्रमण एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन, राजरहाट में कार्यक्रम हुआ। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि जिस प्रकार नमक के बिना भोजन का मूल्य नहीं है, चमक के बिना वस्तु का मूल्य नहीं है, नींव के बिना मकान का मूल्य नहीं है, उसी प्रकार शिक्षा के बिना जीवन का मूल्य नहीं है।

शिक्षा से व्यक्तित्व का निर्माण होता है। शिक्षा 'सत्यं शिवं सुंदरं' का समन्वित रूप है। शिक्षा के साथ सद्संस्कार, सद्चरित्र का होना जरूरी है। विनम्रता, सहनशीलता, जागरूकता, स्वस्थता, श्रमशीलता, सद्संस्कारी बनने के सूत्र हैं। जीवन में विनम्रता जरूरी है। विनम्रता के बिना सत्य शील की साधना असंभव है। अहंकार से व्यक्ति का नुकसान होता है।

मुनिश्री ने जीवन विज्ञान के प्रयोग कराए। सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति के बारे में बताते हुए स्वस्थ जीवन जीने की प्रेरणा दी। मुनि कुणाल कुमार जी ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

विशिष्ट प्रतिभा

आयुषी जैन

पिलानी।

सुशील कुमार बैंगानी की पौत्री, राम-सोनिका बैंगानी (बीदासर-नोएडा) की पुत्री, तेरापंथ समाज की बेटी आयुषी जैन ७५वें गणतंत्र दिवस पर दिल्ली के कर्तव्य पथ पर सह-कमांडर के रूप में ५१ एनसीसी छात्रा कैडेटों के पिलानी बैंड का नेतृत्व कर रही है।

आयुषी जैन राजस्थान के बिट्स परिसर, पिलानी में स्थित बिरला बालिका विद्यापीठ में पढ़ रही हैं। वह ट्रमपेट पर ७० से अधिक देशभक्ति और मार्शल धुनें बजा सकती हैं। विद्यालय का यह बैंड पूरे साल नियमित रूप से कठिन अभ्यास करता है।

गणतंत्र दिवस परेड में प्रस्तुति देने के लिए पिलानी बैंड पिछले एक महीने से दिल्ली के डीजी-एनसीसी कैंप में सर्द सुबहों में अभ्यास कर रहा है। इस बैंड ने कई आर्मी, नेवी और डिफेंस चीफ के समक्ष शानदार प्रदर्शन भी दिया।

बीबीवीपी, पिलानी की कक्षा ६ की प्रतिभाशाली छात्रा आयुषी जैन स्वभाव से बहुत विनम्र और संस्कारी है। शैक्षणिक प्रतिभा के साथ-साथ वह नोएडा तेरापंथ कन्या मंडल की भी सक्रिय सदस्य हैं। उनके पिता तेरापंथ समाज के सेवाभावी श्रावक हैं और माता अभातेममं की कार्यकारिणी सदस्य हैं।

कौन बनेगा ज्ञानवीर सीजन-४ का आयोजन

उधना।

तेयुप के निर्देशन में तेरापंथ किशोर मंडल, उधना द्वारा कौन बनेगा ज्ञानवीर सीजन-४ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण से तेयुप भजन मंडली द्वारा की गई। तेयुप मंत्री विकास कोठारी ने कार्यक्रम में भाग ले रहे सभी प्रतिभागियों का स्वागत-अभिनंदन किया। कार्यक्रम कुल तीन राउंड में आयोजित किया गया, जिसमें ३५० से ज्यादा रजिस्ट्रेशन हुए। प्रथम राउंड में ५० सवाल पूछे गए, जिसमें से १०० प्रतिभागी चुने गए। दूसरे राउंड में ३० सवाल पूछे गए। तीसरे फाइनल राउंड में २० सवाल पूछे गए, जिसमें १० प्रतिभागियों ने भाग लिया। तीसरे राउंड में कार्यक्रम के होस्ट के रूप में तेरापंथ धर्मसंघ की सुमधुर गायिका अभिलाषा बांठिया ने कार्यक्रम का संचालन किया।

अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने जूम के माध्यम से अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई एवं कार्यक्रम के प्रथम विजेता मुस्कान जैन, मुंबई के नाम की घोषणा की। कार्यक्रम के द्वितीय विजेता अर्हम जैन के नाम की घोषणा स्थानीय निवर्तमान अध्यक्ष सुनील चंडालिया ने की। कार्यक्रम के तृतीय विजेता रेखा धाकड़ के नाम की घोषणा अभातेयुप साथी उत्कर्ष खाब्या ने की। अभिलाषा बांठिया का महिला मंडल उपाध्यक्ष महिमा चोरड़िया द्वारा सम्मान किया गया।

ज्ञानवीर सीजन-४ के संपूर्ण कार्यक्रम में किशोर मंडल, उधना, तेयुप टीम से उत्कर्ष खाब्या, बसंत बैद, वैभव ढिलीवाल, वरुण बोथरा, निलेश सिंघवी, प्रकाश श्रीश्रीमाल का विशेष श्रम रहा। किशोर मंडल संयोजक प्रथम कोठारी ने आभार व्यक्त किया।

आध्यात्मिक मिलन समारोह

सरदारपुरा, जोधपुर।

सरदारपुरा स्थित मेघराज तातेड़ भवन में साध्वी गुप्तिप्रभा जी का साध्वी रतिप्रभा जी से आध्यात्मिक मिलन हुआ। साध्वी गुप्तिप्रभा जी सहयोगी साध्वियों के साथ असाड़ा में चातुर्मास संपन्न कर पाद-विहार करते हुए जोधपुर पधारे हैं। साध्वीश्री प्रातः पाल रोड स्थित भंसाली भवन से विहार कर शास्त्रीनगर सिथत विमलराज सिंघवी के निवास स्थान पर पधारे, जहाँ विराजित साध्वी कुंदनप्रभा जी व सहवर्ती साध्वीवृंद से मिलन हुआ। आध्यात्मिक मिलन के बाद साध्वीश्री वहाँ से विहार कर सरदारपुरा स्थित मेघराज तातेड़ भवन पधारे जहाँ विराजित साध्वी रतिप्रभा जी से आध्यात्मिक मिलन हुआ।

अस्थि चिकित्सा शिविर का आयोजन

पूर्वांचल-कोलकाता।

डॉ० धरीज मरोठी की देखरेख में अस्थि चिकित्सा शिविर का आयोजन एटीडीसी पूर्वांचल-कोलकाता में किया गया। कुल १२ व्यक्तियों ने इस शिविर में चिकित्सा का लाभ लिया। तेयुप, पूर्वांचल-कोलकाता ने डॉ० धीरज मरोठी को उनके द्वारा प्रदत्त निरंतर सहयोग के लिए विशेष साधुवाद प्रेषित किया।

तेयुप से एटीडीसी के परामर्शक रवि दुगड़, उपाध्यक्ष-द्वितीय नीरज बैंगानी एवं संयोजक रोहित धाड़ेवा ने इस शिविर में पूर्ण सहभागिता दर्ज कराई।

अणुव्रत गीत महासंगान के विविध आयोजन

छोटी खाटू

अणुव्रत विश्व भारती के निर्देशन में छोटी खाटू, समिति की ओर से विद्यालयों में आठ ग्रुपों के लगभग २४ संयोजकों द्वारा अणुव्रत गीत महासंगान कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें क्रमशः राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, महात्मा गांधी गवर्नमेंट स्कूल, प्रीस्टार पब्लिक स्कूल, ऑक्सफोर्ड स्कूल, बचपन स्कूल, श्री श्याम बाल विद्या मंदिर, एम०डी०एस० स्कूल आदि विद्यालयों के ३८१४ बच्चों द्वारा अणुव्रत गीत का संगान किया गया। साथ ही अणुव्रत उद्घोष की गूँज ने समग्र वातावरण को अणुव्रतमय बना दिया।

कार्यक्रम के सफल व्यवस्था में तेरापंथ सभा, तेमम, तेयुप, अणुव्रत समिति, कन्या मंडल का विशेष योगदान रहा। सभा मंत्री विकास सेठिया ने कार्यक्रम का संचालन किया। सभी विद्यालयों के शिक्षक एवं विद्यार्थियों ने अणुव्रत गीत संगान में न केवल गहरी दिलचस्पी दिखाई अपितु इस गीत के हर पंक्ति को सशक्त भारत के निर्माण का एक महान आयाम बताया।

पंजाब

साध्वी कनकरेखा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, भाभा के हॉल में अणुव्रत गीत महसंगान का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर रोट्रेक्ट क्लब कोषाध्यक्ष तेज बंसल, विभाग प्रमुख सामाजिक समरसता व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से यशपाल सिंगला, भारतीय जनता पार्टी स्थानीय अध्यक्ष परमेंद्र गुप्ता मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

साध्वी कनकरेखा जी ने कहा कि अणुव्रत अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में अणुव्रत आंदोलन की ७५वें वर्ष की गौरवशाली यात्रा विकास के क्षितिज पर जनकल्याण का परचम फैला रही है। बीसवीं सदी के महान संत गुरुदेव तुलसी ने भारत की आजादी के साथ ही मानवीय मूल्यों की सुरक्षा हेतु अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया था।

साध्वीश्री जी ने आगे कहा कि अणुव्रत गीत के इस महायज्ञ में तेरापंथी सभा, महिला मंडल, तेयुप, कन्या मंडल सभी के स्वर बड़े ही जोश के साथ मुखरित हो रहे हैं। इस गीत की हर पंक्ति में समाजसुधार, राष्ट्रीय एकता, चरित्र निर्माण के बड़े ही सुंदर टिप्स दिए गए हैं। साध्वी गुणप्रेक्षाश्री जी ने अपने विचार रखे।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा आयोजित इस अभियान में अहिंसा प्रशिक्षण केंद्र, स्कूल व कॉलेज में गीत का संगान व फार्म भरवाए गए। आरएसएस संस्था सदस्य विनोद जैन, यशपाल सिंगला, सभाध्यक्ष राजेश गुप्ता ने अपने विचार रखे। प्रिंसिपल अशोक ने वीडियो प्रभारी का कार्य किया।

मदुरै

अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के निर्देशानुसार मदुरै तेयुप के तत्त्वावधान में हरण दिवुभाई इंदरमलजी जैन स्कूल के प्रांगण में अणुव्रत गीत महासंगान कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस महासंगान में स्कूल के ५३८ बच्चों तथा स्कूल के अध्यापकों ने भाग लिया। स्कूल के चेयरमैन, मदुरै जैन समाज के वरिष्ठ बरदावरमल जैन का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम में संभाग प्रमुख नितेश कोठारी, तेयुप मंत्री राजकुमार नाहटा, कोषाध्यक्ष महावीर भंसाली, पूर्व अध्यक्ष जितेंद्र चौपड़ा की उपस्थिति रही। विद्यार्थियों को तमिल व इंग्लिश में सरल शब्दों में अणुव्रत से परिचित करवाया गया।

रतलाम

रतलाम में जैन समाज द्वारा अणुव्रत गीत महासंगान कार्यक्रम का आयोजन हुआ। जिसमें सर्किल जेल, रतलाम के कैदियों को अणुव्रत के माध्यम से यह जानकारी दी गई कि कैसे वे आने वाले समय में अच्छे आचरण, व्यसनमुक्त जीवन व सभी से मैत्री रखकर अपने जीवन में सफल हो सकते हैं। सभी ने अणुव्रत गीत का सामूहिक संगान किया। बच्चों ने व्यसनमुक्त रहने का संकल्प भी लिया। लगभग २५०० छात्र-छात्राएँ व जेल के १२५ कैदियों द्वारा अणुव्रत गीत का संगान किया गया।

जिला सर्कल जेल, समता इंटरनेशनल स्कूल, जैन विद्या निकेतन, आजाद कॉन्वेंट स्कूल, ज्योति कॉन्वेंट स्कूल, गुजराती हायर सेकेंडरी स्कूल, श्री मात्र विद्या मंदिर, श्री अरविंद आश्रम, शासकीय हाईस्कूल मऊ, शासकीय माध्यमिक विद्यालय छायन पूर्व, शासकीय माध्यमिक विद्यालय धामनिया, शासकीय माध्यमिक विद्यालय, आमलीपाड़ा, शासकीय माध्यमिक विद्यालय धराड़ आदि अनेकों स्थानों पर अणुव्रत गीत महासंगान का कार्यक्रम आयोजित किया गया। तेरापंथ सभा, तेयुप, महिला मंडल सहित स्कूल प्रबंधन आदि के सदस्य उपस्थित थे।

साउथ हावड़ा

अणुव्रत अमृत महोत्सव के गौरवशाली अवसर पर अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी की प्रस्तुति अणुव्रत गीत महासंगान के अंतर्गत अणुव्रत समिति हावड़ा के साथ तेयुप ने क्षेत्र के विभिन्न कॉम्प्लेक्स में अणुव्रत गीत के संगान का आयोजन किया। अणुव्रत गीत संगान के क्षेत्र में सभी संस्थाओं, तेरापंथी सभा, तेमम, टीपीएफ के सहयोग से लगभग २५ कॉम्प्लेक्स में आयोजन के साथ-साथ ७५० से ज्यादा संख्या में लोगों ने अणुव्रत गीत संगान में हिस्सा लिया।

गंगेज गार्डन, आइडियल ग्राउंड, आलोका सिनेमा, गणेश चैटर्जी लेन, शांतिनिकेतन अपार्टमेंट, गगनदीप अपार्टमेंट, नीलांचल अपार्टमेंट, राघव रेसीडेंसी, विक्रम विहार, सरत सदन, त्रिमूर्ति भवन, कौशिक भवन, श्री अपार्टमेंट, पंचशील अपार्टमेंट, बेनी माधव मुखर्जी लेन, रामेश्वर मालिया लेन, फजीर बाजार, नागा बाबा आश्रम, गैलेक्सी टर्फ, क्लब टाउन रिवर्डेल, शिक्षा सदन स्कूल, गंगेज स्काई, विवेक विहार साउथ हावड़ा, तेरापंथी सभा भवन एवं घरों में संगान किया गया।

F हमारे जीवन में शरीर का महत्त्व है, वाणी का भी महत्त्व है और मन का भी महत्त्व है। शरीर, वाणी और मन पर संयम की लगाम रहती है तो वे हमारे लिए हितावह हो जाते हैं।

– आचार्यश्री महाश्रमण

सीपीएस कार्यशाला का दीक्षांत समारोह का आयोजन

सूरत।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप, सूरत द्वारा आयोजित सप्त दिवसीय कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला का दीक्षांत समारोह अभातेयुप राष्ट्रीय संगठन अमित सेठिया की अध्यक्षता में आगाज हुआ।

मुख्य अतिथि के रूप में संस्था शिरोमणि महासभा के सहमंत्री अनिल चंडालिया, सीपीएस प्रोविजनल नेशनल ट्रेनर चिराग पामेचा एवं जोनल ट्रेनर चेतना सिंघवी, अतिथि विशेष जीएसटी ऑफिसर विमल सोनी, गरिमामय उपस्थिति महिला मंडल अध्यक्षा चंदा भोगर, अभातेयुप परिवार, अणुव्रत ग्रेटर सूरत अध्यक्ष विमल लोढ़ा, जेटीएन संपादक पवन फुलफगर, प्रवृत्ति सलाहकार प्रकाश छाजेड़ उपस्थित रहे।

प्रायोजक इंदरचंद पारख परिवार, नोखा, सूरत तथा नवीन कुमार दिलीप कुमार बच्छावत की उपस्थिति रही। तेयुप, सूरत अध्यक्ष सचिन चंडालिया, मंत्री श्रेयांस सिरोहिया, तेयुप पदाधिकारी, कार्यकर्ता, सीपीएस टीम तथा सीपीएस के २ बेच के ५७ संभागियों ने विभिन्न-विभिन्न विषयों पर अपनी प्रस्तुति दी तथा संभागियों के परिजनों ने उत्साहवर्धन हेतु अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री श्रेयांस सिरोहिया ने किया।

स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन

बैंगलुरु।

राजाजीनगर विद्योदया एजुकेशनल सोसायटी द्वारा संचालित नंदिनी लेआडट स्थित आचार्यश्री महाप्रज्ञ हाई स्कूल में तेयुप, बैंगलुरु द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एवं डेंटल केयर ने शिक्षकों और कर्मचारियों के लिए निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन किया गया। स्वास्थ्य जाँच में लिपिड प्रोफाइल, लिवर फंक्शन टेस्ट, यूरिया, क्रिएटिनिन, केल्शियम, फास्फोरस जैसे महत्त्वपूर्ण टेस्ट किए गए। कुल ५५ लाभार्थियों ने इस शिविर का लाभ लिया।

विद्यालय की संस्थापिका एवं वर्तमान में सोसायटी की मंत्री, प्रधानाचार्य पार्वती आर ने तेयुप द्वारा स्वास्थ्य के क्षेत्र में किए गए कार्यों की अनुमोदना की और भविष्य के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित की। शिविर के सफल आयोजन में विद्यालय के संस्थापक एवं वर्तमान में सोसाइटी के चेयरमैन डॉ० मनोहर भारती एवं तेयुप, बैंगलुरु के अध्यक्ष रजत बैद का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

सह-संयोजक प्रसन्न धोका, संचालन समिति सदस्य भरत रायसोनी, रेनू कोठारी, वंदना कोठारी, सेंटर कर्मचारी–काव्या एवं दाक्षायिनी का विशेष सहयोग रहा। संयोजक विनय बैद ने सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया।

निःशुल्क बोन मिनरल डेंसिटी कैंप का आयोजन

राजाजीनगर।

तेयुप, राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम में निःशुल्क बोन मिनरल डेंसिटी कैंप का आयोजन किया गया। कैंप की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से करते हुए चालीस वर्ष की आयु सीमा के ऊपर के पुरुष एवं महिलाओं की हड्डियों की जाँच की गई। हड्डी विशेषज्ञ ऑर्थोपेडिक डॉक्टर शशि किरण द्वारा सभी लाभार्थियों की जाँच कर उचित परामर्श देते हुए कैल्शियम युक्त चीजों का सेवन एवं व्यायाम आदि से अवगत कराया गया।

कैंप के दौरान साध्वी मल्लिश्री का एटीडीसी श्रीरामपुरम में पधाना हुआ। साध्वीश्री जी ने परिषद परिवार के प्रति मंगलकामना व्यक्त करते हुए भगवान पार्श्वनाथ की स्तुति करते हुए मंगलपाठ सुनाया।

लगभग ३ घंटे तक चले इस कैंप में कुल ५५ लाभार्थी लाभान्वित हुए। एटीडीसी स्टाफ स्मिता, श्यामला एवं दीपाश्री का सहयोग रहा। तेयुप से अध्यक्ष कमलेश गन्ना, हरीश पोरवाड़ एवं राजेश देरासरिया ने अपनी सेवाएँ प्रदान की।

अभिनव सामायिक फेस्टिवल के विविध आयोजन

शालीमार बाग

शासनश्री साध्वी रतनश्री जी के सान्निध्य में तेयुप द्वारा समायोजित अभिनव सामायिक का कार्यक्रम हुआ। साध्वी चिंतनप्रभा जी ने प्रारंभ में त्रिपदी वंदना एवं लोगस्स का ध्यान कराया। बाद में शासनश्री साध्वी सुव्रतांजी ने दीर्घ श्वास प्रेक्षा त्रिगुप्ति की साधना, जप एवं स्वाध्याय का प्रयोग कराते हुए कहा कि तेयुप एक सक्रिय संस्था है। कार्यकर्ताओं में कुछ करने की ललक है एवं गतिशील चरणों में आगे बढ़ने का संकल्प है। आँखों में नया करने का सपना है।

सामायिक व्यक्ति की जीवन दिशा को बदल देती है। जीवन का भविष्य स्वर्णिम बन सकता है। सामायिक चाहे एक ही करें, वह विधिपूर्वक करें। आचार्यश्री तुलसी के अग्रज भ्राता मोहनलाल खटेड़ एवं मिश्रीमल सुराणा का जीवन प्रसंग सुनाते हुए साध्वी सुव्रतांजी ने सबको प्रतिदिन एक सामायिक करने की प्रेरणा प्रदान की।

तेरापंथ महासभा के उपाध्यक्ष संजय खटेड़ ने भावाभिव्यक्ति देते हुए तेयुप के कार्यों की सराहना की। दिल्ली तेयुप के कार्यकर्ता सौरभ आंचलिया ने सामायिककर्ताओं के प्रति धन्यवाद ज्ञापन एवं साध्वीश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

गोरेगाँव

अभातेयुप द्वारा निर्देशित अभिनव सामायिक फेस्टिवल का आयोजन तेरापंथ भवन के प्रांगण में किया गया। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। जिसमें उपासक प्रकाश हिरण, रमेश सिंघवी, उपासिका मंजु हिरण ने सामूहिक स्वाध्याय, जप, तप आदि पर प्रकाश डाला एवं सामायिक की महत्ता बताई। तीनों उपासकों द्वारा सभी की जिज्ञासाओं का समाधान किया गया।

इस अवसर पर सभा अध्यक्ष चतरलाल सिंघवी, मंत्री रमेश राठौड़, तेयुप अध्यक्ष रमेश सिंघवी, मंत्री सुमित चोरड़िया, महिला मंडल, सह-संयोजिका ममता चिप्पड़, अणुव्रत संयोजिका एवं कन्या मंडल प्रभारी डिंपल हिरण आदि पदाधिकारियों की उपस्थिति रही। अभिनव सामायिक में सभा, तेयुप, महिला मंडल एवं पूरे समाज की उपस्थिति रही।

राजाजीनगर

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा अभिनव सामायिक फेस्टिवल-उत्सव विश्व मैत्री का स्थानीय तेरापंथ सभा भवन, राजाजीनगर में साध्वी प्रतिभाजी की सहवर्ती साध्वी आस्थाश्री जी, साध्वी ऋषिताश्री जी के सान्निध्य में आयोजन किया गया।

प्रथम सत्र में उपासक राजमल बोहरा ने अभिनव सामायिक का प्रयोग करवाया। तेयुप अध्यक्ष कमलेश गन्ना ने श्रावक-श्राविका समाज का स्वागत करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। तेरापंथ सभा ट्रस्ट अध्यक्ष रोशनलाल कोठारी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

द्वितीय सत्र में साध्वी आस्थाश्री जी ने सामायिक का महत्त्व बताते हुए कहा कि हमें प्रतिदिन स्वयं के लिए ४८ मिनट का समय अवश्य देना चाहिए। साध्वी ऋषिताश्री जी ने एक कहानी के माध्यम से सामायिक का विश्लेषण किया तथा कहा कि वर्ष २०२४ में इस चौबीस को डबल करते हुए अपने आत्मकल्याण के पथ पर आगे बढ़ें। मंच संचालन एवं आभार तेयुप सहमंत्री जयंतीलाल गांधी ने किया।

गंगाशहर

अभातेयुप के तत्त्वावधान में स्थानीय तेयुप द्वारा अभिनव सामायिक का आयोजन किया गया। मुनि श्रेयांस कुमार जी एवं मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' के सान्निध्य में २५० भाइयों व बहनों ने सामायिक की आराधना की। सामायिक के दौरान त्रिपदी वंदना, जपयोग, ध्यानयोग एवं स्वाध्याय करवाया गया। मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' ने कहा कि आत्मा ही सामायिक है, आत्मा में स्थित रहना ही सामायिक है। काम, क्रोध, ईर्ष्या, वासना से हटकर आत्मा में निवास करना ही सामायिक साधना है।

इस अवसर पर मुनि श्रेयांस कुमार जी ने सामूहिक सामायिक का संकल्प करवाया तथा सुमधुर गीत के साथ प्रेरणा प्रदान की। तेयुप अध्यक्ष अरुण नाहटा, मंत्री भरत गोलछा आदि पदाधिकारी, कार्यकर्ताओं के साथ लगभग २५० श्रावक-श्राविकाओं ने अभिनव सामायिक का प्रयोग किया। कार्यक्रम में अभातेयुप से सामायिक एवं तपोयज्ञ के राज्य प्रभारी ललित राखेचा ने आभार व्यक्त करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। तेयुप सहमंत्री मांगीलाल बोथरा ने कार्यक्रम का संचालन किया।

उधना

अभातेयुप के निर्देशन में अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा के नेतृत्व में तेयुप, उधना द्वारा अभिनव सामायिक फेस्टिवल उत्सव विश्व मैत्री का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत, मंगलाचरण, विजय गीत से तेयुप सदस्यों द्वारा की गई। उपासक लादूलाल नंगावत एवं नेमीचंद कावड़िया के निर्देशन में सामायिक हुई। तेयुप मंत्री विकास कोठारी ने अभिनव सामायिक की संपूर्ण जानकारी दी।

उपासकों ने सामायिक को समता की साधना और आत्मा को निर्मल करने का महत्त्वपूर्ण उपक्रम बताया। अभातेयुप सरगम राष्ट्रीय प्रभारी अर्पित नाहर ने बताया कि आचार्यश्री महाश्रमणजी के इंगितानुसार हमारी संस्था समय-समय पर विश्व मैत्री एवं विश्व कल्याण के कार्य आगे भी करती रहेगी। पूरे भारत में आज यह आयोजन आयोजित किया जा रहा है एवं उपस्थित उपासक महोदय के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित की। कार्यक्रम के संयोजक प्रवीण गांधी के द्वारा आभार ज्ञापन किया गया।

हैदराबाद

शंकरपल्ली स्थित टी०एस० मॉडल हाईस्कूल प्रांगण में अभातेयुप द्वारा निर्देशित अभिनव सामायिक फेस्टिवल का आयोजन तेयुप द्वारा किया गया। इस अवसर पर साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि जीवन में शांति, शक्ति और आनंद प्राप्ति के लिए समता की साधना महत्त्वपूर्ण उपक्रम है। गुरुदेव तुलसी द्वारा प्रदत्त अभिनव सामायिक का उपक्रम जीवन विकास और आत्मविकास में वरदान सिद्ध हो रहा है।

इस अवसर पर मुख्यि अतिथि के रूप में उपस्थिति शंकरपल्ली नगर पालिका चेयरपर्सन विजय लक्ष्मी ने साध्वीवृंद का हार्दिक स्वागत किया। उन्होंने कहा कि साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के साथ वार्ता करके और दर्शन करके मैं अभिभूत हूँ। जिनेंद्र तातेड़, पंकज जैन, मनोज जैन, ओमप्रकाश सिरवी, सोहनबाल सिरवी एवं प्रभुराम सिरवी ने विद्यालय प्रांगण में साध्वीश्री जी की सेवा-दर्शन का लाभ लिया।

साध्वी डॉ० शौर्यप्रभा जी ने उपस्थित सामायिक साधकों को अभिनव सामायिक का प्रयोग करवाया। तेयुप अध्यक्ष निर्मल दुगड़ ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किए। इस अवसर पर विहार सेवा प्रभारी संपत गोलछा, प्रेम सुख बैंगानी, विहार यात्रा ग्रुप सदस्य, सुजीत कोठारी, अशोक सेठिया, तेयुप सदस्य प्रकाश दुगड़ सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे।

राजराजेश्वरी नगर

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा अभिनव सामायिक फेस्टिवल का आयोजन उपासक-उपासिकागण की उपस्थिति में तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत सामूहिक नवकार मंत्र द्वारा की गई। तेयुप अध्यक्ष विकास छाजेड़ ने पधारे हुए सभी का स्वागत-अभिनंदन किया। सर्वप्रथम त्रिपदी वंदना का प्रयोग उपासिका लता बाफना द्वारा करवाया गया। उपासिका हेमलता सुराणा ने लोगस्स पाठ का ध्यान करवाया। जप के अंतर्गत ध्यान की मुद्रा में अ०सि०आ०उ०सा० मंत्र का सामूहिक जप उपासिका सरोज आर० बैद द्वारा करवाया गया। ध्यान के प्रयोग उपासक छतर सिंह सेठिया ने करवाए।

प्रवक्ता उपासिका कंचन छाजेड़ ने कहा कि जिस प्रकार हम अपने कमरे की सफाई कर कचरे को बाहर निकालते हैं, उसी प्रकार हम सामायिक कर अपनी आत्मा की सफाई करते हैं। सामायिक में हम पापकारी गतिविधियों का त्याग कर कर्मों को हल्का करते हुए कर्मों की निर्जरा करते हैं। उपासिका शोभा बोथरा ने त्रिगुप्ति साधना का प्रयोग करवाया। अंत में परमेष्ठि वंदना का सामूहिक संगान किया गया।

इस अवसर पर अभातेयुप से सीपीएस प्रभारी दिनेश मरोठी, एटीडीसी सह-प्रभारी आलोक छाजेड़, तेयुप आर०आर० नगर अध्यक्ष विकास छाजेड़, मंत्री धर्मेश नाहर, निवर्तमान अध्यक्ष कौशल लोढ़ा सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन सामायिक प्रभारी निशांत श्यामसुखा ने किया। आभार ज्ञापन मंत्री धर्मेश नाहर ने किया।

कोलकाता

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में अभातेयुप द्वारा प्रस्तुत अभिनव सामायिक फेस्टिवल का आयोजन राजरहाट स्थित महाश्रमण विहार में तेयुप पूर्वांचल-कोलकाता, साउथ कोलकाता, साउथ हावड़ा, उत्तर हावड़ा, हिंदमोटर, बेहाला, उत्तर कोलकाता मेन, मध्य उत्तर कोलकाता, टॉलीगंज द्वारा किया गया। अभिनव सामायिक कार्यक्रम में अच्छी संख्या में युवकों व श्रावक-श्राविकाओं ने सामायिक की।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि जैन साधना पद्धति में सामायिक का बहुत बड़ा महत्त्व है। सामायिक विभाव से स्वभाव, अहं से अर्हम पतित से पावन, कंकर से शंकर, जीव से शिव की यात्रा है। सामायिक एक अनमोल रत्न है, जो अपने आपमें अलौकिक व विशिष्ट है। सामायिक से साधक के चित्त की निर्मलता बढ़ती है। श्रावक के बारह व्रतों में एक व्रत है–सामायिक।

मुनिश्री ने आगे कहा कि प्रत्येक व्यक्ति सफलता चाहता है, सफलता का महामंत्र है वर्तमान में जीना, राग-द्वेष से मुक्त जीना व समता से जीना। समता की साधना का एक आयाम है–सामायिक। सामायिक में साधुता का भाव प्रकट होता है। सामायिक से सकारात्मक सोच का विकास होता है, आनंद की अनुभूति होती है। प्रत्येक श्रावक-श्राविकाओं को अभिनव सामायिक की साधना करनी चाहिए।

मुनि परमानंद जी ने कहा कि सामायिक से जीवन में संतुलन व धैर्य का विकास होता है। बाल मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। इस अवसर पर अभिनव सामायिक फेस्टिवल के पश्चिम बंगाल प्रभारी राजीव बोथरा ने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का शुभारंभ पूर्वांचल स्वर लहरी के विजय गीत संगान से हुआ। आभार ज्ञापन पूर्वांचल तेयुप के मंत्री सिद्धार्थ दुधेड़िया ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में बृहतर कोलकाता की सभी परिषदों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

सम्यक्त्व प्राप्ति के लिए नव तत्त्वों को करें आत्मसात : आचार्यश्री महाश्रमण

ठाणा, १६ जनवरी, २०२४

पंचदिवसीय ठाणा प्रवास के चौथे दिन तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आगम वाणी की अमृत वर्षा करते हुए फरमाया कि एक प्रश्न हो सकता है कि यह सृष्टि, यह जगत क्या है? इस प्रश्न के उत्तर में जैन दर्शन में बताया गया है कि यह लोग षट्-द्रव्यात्मक है। छः द्रव्यों का समवाय यह जगत है।

इस दुनिया में आकाश, काल, पुद्गल, जीव, धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय नाम के द्रव्य हैं। जो कुछ है, वह इन छः द्रव्यों में समाविष्ट हो सकता है। दूसरा प्रश्न है कि हमें परम सुख-मोक्ष कैसे मिले। हमें सर्व दुखों से छुटकारा व शाश्वत सुख चाहिए।

नव तत्त्व है–जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध, मोक्ष इनको समझ लो और कल्याणकारी रास्ते पर चलो तो तुम सर्वदुःख मुक्ति को प्राप्त हो सकोगे। जैन दर्शन में नव तत्त्वों पर सम्यक् श्रद्धा होना सम्यक्त्व होता है। आत्मा के कर्मों का बंध होता है, वह पुण्य या पाप के रूप में फल देता है। पुण्य-पाप का बंध आश्रव के द्वारा होता है। पाँच आश्रवों से कर्मों का आकर्षण होता है, बंध होता है।

जीव के कर्म कोई न लगे, इसका उपाय है–संवर करो। संवर से कर्म आने के द्वार बंद हो जाते हैं। पूर्वार्जित कर्म को दूर करने का उपाय है–निर्जरा। तपस्या के द्वारा पूर्व में बंधे कर्मों का निर्जरण किया जा सकता है, आत्मा निर्मल हो सकती है। संवर और निर्जरा की साधना से जो अंतिम परिणति आएगी वह है–मोक्ष। सर्व पाप क्षय होने से आत्मा स्व स्वरूप में स्थित हो जाएगी। सर्वदुःख मुक्ति की स्थिति हमेशा के लिए हो जाएगी।

छः द्रव्यों में नव तत्त्व समा सकते हैं, नव तत्त्व में छः द्रव्य समाविष्ट हो सकते हैं, पर दोनों की पृष्ठभूमि अलग-अलग है। जहाँ दुनिया के बारे में बताना होता है, वहाँ छः द्रव्यों को समझाया जाता है, यह अस्तित्ववाद है। जहाँ आत्म-साधना की बात बतानी है, वहाँ नव तत्त्वों को समझना आवश्यक है।

दुनिया में अनेक ज्ञान के विषय हैं पर ये नव तत्त्व अध्यात्म विद्या के प्रश्न हैं। सम्यक्त्व के लिए नव तत्त्वों को अच्छी तरह आत्मसात् करना जरूरी है। साधना करने से पहले उसकी जानकारी होनी चाहिए। सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन के बिना सम्यक् चारित्र भी नहीं हो सकता। सम्यक्त्व बहुत बड़ी चीज है, परम रत्न, परम मित्र, परम बंधु, और परम लाभ सम्यक्त्व ही है, जो वीतराग प्रभु ने प्रवेदित ने किया है, वही सत्य है।

हमें तो सत्य और मोक्ष चाहिए, वो मार्ग बताने वाले मिल जाएँ, हमें वे चाहिए। फिर वेशभूषा, पंथ या संत कोई भी हो। राग-द्वेष मुक्ति ही मुक्ति है। हम कषायमंदता की साधना करें, तत्त्व बोध को ग्रहण करने का प्रयास करें। हमारा सम्यक्त्व पुष्ट रहे, हमें क्षायिक, सम्यक्त्व प्राप्त हो, यथार्थ पर श्रद्धा रहे और हम सर्वदुःख मुक्ति की ओर आगे बढ़ने का प्रयास करें।

कोपरखेरणा के श्रावकों द्वारा दीक्षा महोत्सव के बैनर का अनावरण पूज्यप्रवर की सन्निधि में हुआ। सांसद डॉ० संजीव नायक ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

मुनि आलोक कुमार जी ने गुरुदर्शन कर अपनी भावना अभिव्यक्त की। मुनि लक्ष्य कुमार जी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

पाँच महाव्रत बहुत बड़ी संपदा और बहुत बड़ा त्याग है : आचार्यश्री महाश्रमण

ठाणा, १७ जनवरी, २०२४

विश्व शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि साधु के पाँच महाव्रत बताए गए हैं–सर्व प्राणातिपात विरमण, सर्व मृषावाद विरमण, सर्व अदत्तादान विरमण, सर्व मैथुन्य विरमण और सर्व परिग्रह विरमण। यह भी बताया गया है कि जैन शासन में, भगवान महावीर के इस शासन में ये पाँच महाव्रत उल्लेखित है तो भगवान पार्श्व व पूर्व के २१ तीर्थंकर के समय चातुर्याम धर्म निरुपित था। भगवान ऋषभ और भगवान महावीर ने पंचमहाव्रत रूप धर्म साधुओं के लिए निरूपित किए थे।

पाँच महाव्रत बहुत बड़ी संपदा और बहुत बड़ा त्याग है। संपदा दो प्रकार की बताई गई है–एक तो धन या सत्ता के रूप में भौतिक संपदा, दूसरी आध्यात्मिक संपदा। आगम साहित्य में आठ गणी संपदाएँ बताई गई हैं। इनमें पहली संपदा है–आचार संपदा। आर्थिक संपदा के सामने पाँच महाव्रतों की संपदा बहुत उत्कृष्ट होती है। महाव्रत की संपदा का प्रभाव आगे भी हो सकता है। वह परम सुख देने वाली संपदा है।

गणी संपदा में दूसरी श्रुत संपदा है। फिर शरीर संपदा, वाणी संपदा, वाचन संपदा, प्रयोग संपदा, मति संपदा। संग्रह परिज्ञा गृहस्थों के भौतिक संपदा के साथ आध्यात्मिक संपदा भी हो। धर्म की संपदा वृद्धिंगत रहे, यह काम्य है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में पूर्व सांसद पुष्पराज जैन, विधायक केशाराम चौधरी, भिक्षु महाप्रज्ञ ट्रस्ट के अध्यक्ष निर्मल श्रीश्रीमाल, जितेंद्र बरलोटा, विजयराज सोलंकी, उपासक श्रेणी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। किशोर मंडल द्वारा आचार्य भिक्षु के तीन दृष्टांत एवं कन्या मंडल द्वारा 'प्राणी समकित किण विध आई रे' पर सुंदर प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

धर्म साधना से बढ़ें परम सुख के पथ...

(पृष्ठ १२ का शेष)

गृहस्थ निंदनीय कार्यों को करने से बचें। पाप कर्म के कार्य न हो जाएँ। उम्र ७५ के आसपास हो जाए तो ज्यादा से ज्यादा समय में धर्म साधना करने का प्रयास हो। अच्छे कार्यों से हम परम सुख की ओर आगे बढ़ सकते हैं।

आज उल्हासनगर आना हुआ है। नारायण भाई की तरह जीवन में परिवर्तन आ सकता है। संतों की संगत जीवन की दशा और दिशा को बदलने में कामयाब हो सकती है। परिवारों में अच्छे संस्कार बने रहें।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि सिंधी व्यक्तियों ने भी जैन धर्म को स्वीकारा जो आजादी के समय शरणार्थी थे। नारायण भाई ने अनेक लोगों को समझाकर जैन बनाया। संतों की संगत से जीवन में रूपांतरण आ सकता है। उल्हासनगर इसका एक उदाहरण है। सत्संगत मिलना दुर्लभ है, इससे हमारा जीवन अमूल्य बन जाता है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में उल्हासनगर सभा अध्यक्ष जीतूभाई, महिला मंडल, जीतमल चोरड़िया, ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों द्वारा नारायण भाई के जीवन पर सुंदर प्रस्तुति हुई।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

मर्यादा महोत्सव के उपलक्ष्य में वंदनीय चारित्रात्माएँ यदि कोई आलेख/कविता/गीत आदि तेरापंथ टाइम्स में प्रकाशित करवाना चाहें तो अपनी कृति abtyptt@gmail.com पर ई-मेल करवा सकते हैं।

– :: निवेदक :: –

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

F वाणी में विष और अमृत दोनों हैं। सत्य, मधुर व हितकर वाणी अमृत होती है और मिथ्या, कटु व अहितकर वाणी विष होती है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

धर्म साधना से बढ़ें परम सुख के पथ पर : आचार्यश्री महाश्रमण

उल्हासनगर, २३ जनवरी, २०२४

मुंबई के औद्योगिक क्षेत्र उल्हासनगर में महायोगी आचार्यप्रवर ने मंगलपावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि प्रश्न होता है कि इस संसार में सुखी कैसे बना जा सकता है, रहा जा सकता है। शास्त्र में सुखी रहने के संदर्भ में बताया गया है कि सुखी बनने के लिए अपने आपको तपाओ, सुकुमारता को छोड़ो। आदमी में कुछ कठोर जीवन जीने का सामर्थ्य भी हो जाए। प्रतिकूलता को आसानी से झेलने की ताकत हो जाए। कठिनाई से ज्यादा डरो मत, भागो मत, जागो।

थोड़ी सी प्रतिकूलता के कारण व्यक्ति कार्य को करना छोड़ देता है, तो कितना ज्यादा नुकसान हो जाता है। लाभ से वंचित रह जाता है। अनेक प्रसंगों में हम थोड़ी कठिनाई को स्वीकार करने का मनोभाव रख लें तो वह ज्यादा परेशान न भी करे। मन में धैर्य और शांति रहे। कठोरता को स्वीकार करो, सुकुमारता को छोड़ो तो सुखी बन सकोगे।

दूसरी बात कामनाएँ सीमित रखो। ज्यादा भौतिक इच्छा रखने से आदमी दुखी बन सकता है। तीसरी बात–द्वेष-ईर्ष्या को छोड़ो। किसी के साथ ईर्ष्या मत रखो। दूसरों को सुखी देखकर हमें दुखी नहीं बनना चाहिए तो दूसरों को दुखी देखकर हमें सुखी नहीं बनना चाहिए। चौथी बात बताई कि राग भाव को छोड़ो। राग से दुःख हो सकता है। राग के समान दुःख नहीं है तो त्याग के समान सुख नहीं है। त्यागी सुखी बन सकता है।

हमें महत्त्वपूर्ण मानव जीवन मिला है, इसका लाभ उठाना चाहिए। शरीर और आत्मा अलग है। हम चिंतन करें कि शरीर के लिए कितना समय लगाते हैं और आत्मा के लिए कितना समय लगाते हैं। २४ घंटों में २ घड़ी (४८ मिनट) तो कम से कम आत्मा के लिए, धर्म के लिए लगाने का प्रयास करें। जप, ध्यान, स्वाध्याय या आत्म-चिंतन में कुछ समय लगाएँ। २ घड़ी का एक मुहूर्त होता है, तो सामायिक भी हो सकती है। इससे हम सुखी बन सकते हैं।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियाँ

vf[kyHkkjrh; rsjkiaFk ;qod ifj"kn~ ds fy, eqnzd] izdk'kd ,oa laiknd & **iadt cqPpk jMkok** }kjk eS- th-ds- Qkbu vkVZ izsl] lh&1] ,QvkbZ,Q] iVi M+xat]
vkS|ksfxd {ks=k] fnYyh&110092 ls eqfnzr rFkk 210] nhun;ky mik/;k; ekxZ] ubZ fnYyh & 110 002 ls izdkf'kr A ldk;Zdkjh laiknd % **fnus'k ejksBh**